जनवरी-२०१८ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जनवरी-२०१८

स्नेह त्याग और परोपकार, निर्मित करते परिवार,
यही भाव यदि फैलें जग में, सुखी बने संसार,
'वसुधैव कुटुम्बकम्' नारा ऋषि का, मानो, हो उपकार ।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७३

क्या खुशबू, क्या स्वाद,
एम डी एच मसाले हैं खास
94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।
खाइये और खिलाइये मज़ेदार स्वाद का आनन्द उठाइये
MDH
मसाले
असली मसाले
सच–सच
Garam masala
Rajmah masala
DEGGI MIRCH
Sabzi masala
Shahi Paneer masala
Dal Makhani masala
Chana masala
Pav Bhaji masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1000
आजीवन	1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	400 रु.	$ 100
वार्षिक	100 रु.	$ 25
एक प्रति	10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
माघ कृष्ण षष्ठी
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

January - 2018

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २६
हलचल २७

०४ वेद सुधा
१३ पाञ्चजन्य घोष हृषीकेश गुंजाओ
१४ मनुष्य शाकाहारी प्राणी
१६ आज क्रान्ति फिर लाना है
१७ तक्षक
१९ मानव जाति की समानता
२१ शची पौलोमी
२२ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/१८
२३ विषम परिस्थितियाँ क्षमता का विकास
२४ प्रतिशोध
२८ स्वास्थ्य समाचार
२९ कथा सरित- पत्नी की कुशलता
३० सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर सिद्धि

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - ०८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

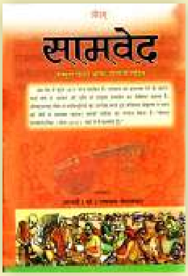

ओ३म्

वेद सुधा

श्रद्धा से परमात्माग्नि का ध्यान'

ओं अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः।। - सामवेद १६

अन्वयः- अग्निम् इन्धानः मनसाधियम् सचेत मर्त्यः। अग्निम् इन्धः विवस्वभिः।।

हे परमेश्वर! हम श्रद्धा से विचारपूर्वक तेरी अग्निरूप वाणी का ज्ञान प्राप्त करके, सभी कर्म करते हुए तुझ परमेश्वर को सूर्य की किरणों के समान अपने हृदयों में (मन-मस्तिष्क में) धारण करें।

प्रस्तुत मंत्र में तीन बातों पर चर्चा की गई है।

अ. श्रद्धापूर्वक ध्यान

ब. ध्यान/उपासना का उचित समय और

स. कर्म का सेवन (फल)।

क. अग्निमिन्धानोः- (अग्निम्+इन्धानः) अर्थात् (मनसा) मन से/हृदय से (अग्निम्) हृदय में छिपे परमात्मारूप अग्नि का ध्यान अर्थात् उस अग्निरूप वाणी का ज्ञान प्राप्त करना। कहने का अभिप्राय यह है कि साधक ज्ञानपूर्वक कर्मों द्वारा (कर्म करते हुए) मनसा= मन से/श्रद्धा से उस प्रभु के स्वरूप का चिन्तन करते हुए अपने नित्य कर्मों का संचालन करें। कर्म तो हर मनुष्य को करने ही पड़ेंगे, उनके बिना सम्पादन के यह मनुष्य रूपी चोला (शरीर) आगे चल ही नहीं सकता। तो क्यों न हम इन कर्मों का सम्पादन सत्य पर चलते हुए अर्थात् सचेत रहते हुए ही ज्ञानपूर्वक (विवस्वभिः)- अज्ञान अर्थात् सभी अन्धकार को विध्वस्त/परास्त करते हुए बुद्धिपूर्वक सोचकर ही करें। क्योंकि 'विचार और बुद्धि' की शक्ति केवल मनुष्य के पास ही है, पशुओं में इसकी क्षमता नहीं।

ख. (अग्निम् इन्धे) श्रद्धापूर्वक चिन्तन से ही वह परमात्माग्नि (इन्धे) प्रदीप्त होती है, अर्थात् उसकी हृदय में अनुभूति निश्चित है।

ग. न्यायदर्शन१/२- विधि और निषेध, हेय तथा उपादेय आदि की व्यवस्था मनुष्य के लिए ही है। पशु में इतनी क्षमता नहीं क्योंकि वह स्थूलरूप से केवल देखकर ही प्रवृत्त होने वाला प्राणी है। जो किसी वस्तु को देखकर ग्राह्य व त्याज्य का विवेक न कर सके उसे पशु कहते हैं। यदि मनुष्य भी इसी विवेक से कर्म न करे तो उसमें और पशु में अन्तर ही क्या हुआ। वैसे तो खाना, सोना, डरना और मैथुन चारों बातें मनुष्य और पशु में समान हैं। पर पशु के स्वाभाविक गुण हैं और मनुष्य में नैमित्तिक गुण।

१. आहार- पशुओं का आहार नियमित और मर्यादित है। शेर केवल मांस ही खाता है। गाय घास-फूंस ही खाती है और मूर्ख गधा भी केवल घास ही खाता है पर मनुष्य में नैमित्तिक गुण होने पर भी जो मिले सब कुछ चट कर जाता है।

२. निद्रा- का भी पशुओं में एक निश्चित समय है। जैसे मुर्गा सूर्योदय से पूर्व ही बांग देता है। मोर ब्रह्ममुहूर्त में मानो मधुर स्वर में प्रभु को याद कर रहा हो। पर अफसोस कि मनुष्य तो भौतिकता के चक्कर में आधी रात से पहले सोता ही नहीं और प्रातः ९-१० बजे उठता है।

३. भय- पशु भय से डरते हैं और कारण दूर होते ही निश्चिंत हो जाते हैं।

पर मनुष्य तो वर्षों बाद भी आने वाले भय की चिन्ता में डूबा रहता है।

४. मैथुन- पशुओं में ऋतुगमन का समय भी निश्चित होता है। वह नर और मादा साथ-साथ रहते हुए भी काम के वशीभूत नहीं होते। पर वाह रे मनुष्य तू तो भौतिकवाद की चकाचौंध में हर समय 'काम' के वशीभूत रहता है।

घ- 'मनसा धियं सचेतः' महर्षि कणाद के शब्दों में श्रद्धापूर्वक मन से ही ईश्वर चिन्तन अर्थात् ध्यान करो। बिना भावों के चिन्तन का कोई अर्थ नहीं। 'श्रद्धा और सत्य' का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।

(१) पहले ज्ञान/विवेक द्वारा सत्य को जान उसे निज के आचरण में धारण करें और सश्रद्ध भावों से प्रभु में मग्न/तल्लीन होकर इसे जानने का प्रयास करें तो निश्चित मानें कि हम तीनों दुःखों से (आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक) छुटकारा पाने में सफल होंगे।

ङ. तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय।' अर्थात् इन तीनों दुःखों से छुटकारा प्रभु के साक्षात्कार (अर्थात् हृदय में प्रभु की अनुभूति) से ही संभव है।

(२) (इन्धानः धियं) मन में प्रभु का चिन्तन कैसे करें। उसका स्वरूप क्या है? आदि प्रश्न हैं। (धियं)= ज्ञानपूर्वक कर्म का सेवन जीवन के व्यवहारों में निरन्तर करने से चिन्तन में शनैः शनैः एकाग्रता आ जाती है। इसका एकमात्र उपाय प्रातः ब्रह्ममुहूर्त का समय ही सबसे उत्तम और उपयुक्त है। 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।' की कहावत यहाँ सिद्ध होती है। सो प्राणायाम साधना के बाद ओंकार उपासना के द्वारा उस प्रभु का चिन्तन- उसके गुण-कर्म-स्वभाव को जानना, उसका अर्थ सहित चिन्तन और व्यवहार में निरन्तर प्रयोग करने से हृदय पटल की सारी पाशें खुल जाती हैं और फलस्वरूप स्वतः ही सत्संग और परसेवा भी जीवन का अभिन्न अंग बनता जावेगा। (विवस्वभिः)- ज्ञानियों का नित्य संग अर्थात् उनसे सत्संग और परिचर्चा द्वारा ज्ञान (इन्धे)- को हम दीप्त करें अर्थात् हम स्वाध्याय सत्संग, शंका-समाधान और चिन्तन द्वारा विशिष्ट ज्ञानियों के साथ सम्पर्क रखते हुए 'प्रकृष्ट' सम्बन्ध वाले बनें और उस ईश्वर के स्वरूप को श्रद्धा भावों से पहचानें।

ख. 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्' यजुः२६/१५ इस मंत्र में स्पष्ट संदेश है कि हम गुरुओं के सान्निध्य, स्तोताओं की संगत और स्वाध्याय से अपनी न्यूनताओं को निरन्तर दूर करते हुए मन में श्रद्धा द्वारा उसका चिन्तन अवश्य करें। निश्चित मानो शान्ति के बीज प्रस्फुटित होने लगेंगे।

(३) मर्त्यः- यहाँ मंत्र में 'मर्त्य' शब्द आया है। इसका अर्थ है कि मनुष्य मरणधर्मा है न जाने कब मृत्यु के आगोश में आ जावे। इसलिए जैसे वह यज्ञकर्म के लिए अग्नि को प्रज्ज्वलित करता है वैसे ही वह इस जन्म में (अर्थात् मनुष्य योनि में ही) योग माध्यम से प्राण साधना द्वारा हृदय में उस परमात्मा को प्रकाशित करने का निरन्तर प्रयास कर समाजसेवा एवं परोपकारी कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीने की दृढ़ इच्छा करे। यजुः ४०/०२

'ज्ञान कर्म उपासना'- तीनों में ज्ञान और कर्म का तो आज बहुतायत में बोलबाला है। यह ज्ञान और कर्म केवल आधिभौतिक सुखों की प्राप्ति पर ही टिक गया है और हम प्राणी विषयों में इतना धंसते व फंसते जा रहे हैं कि हमारे पास स्वयं के लिए, परिवार के लिए वक्त ही नहीं है। संस्कृत के कवि ने ठीक ही कहा है- 'विष से विषय कहीं अधिक भयंकर है। विष तो खाने पर ही मारता है किन्तु विषय तो स्मरणमात्र से ही विनाश कर देते हैं।'

महर्षि पतंजलि के शब्दों में जब तक हम दृढ़ भूमि कर साधना, भजन, चिन्तन और मनन आदि, बाहरी सभी विषयों के बिना नहीं करेंगे (अर्थात् आडम्बरों की परवाह किए बिना)- हम यूँ ही जन्म जन्मान्तरों तक भटकते रहेंगे।

हे प्रभो, यही प्रार्थना करते हैं हम ब्रह्ममुहूर्त में प्राण साधना और श्रद्धा भावों से- ध्यान आपका ही धरते हैं।

हे जगदीश! शुभ इच्छाएँ सभी हमारी पूर्ण करो, सत्य कर्मों से कर्मशील-नित्य तेरी उपासना ही हम करते हैं।

- जीवन लाल आर्य, मंत्री, आर्य समाज, अशोक विहार, दिल्ली
चलभाष- ०९७१८९६५७७५

आत्मनिवेदन

सुभाष जयन्ती के अवसर पर

आजादी का महानायक

अत्यन्त संपन्न परिवार में सर्व सुविधाओं के मध्य पल बढ़कर, ब्रिटिश जमाने की सर्वोच्च सिविल परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त करना किसी भी नौजवान का सपना हो सकता है पर जिसने इस सपने को सच कर दिखाया उसने इस वैभव को ऐसे त्याग दिया जैसे यह उपलब्धि महत्वहीन हो। जी हाँ हम आजादी के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की बात कर रहे हैं। उड़ीसा के एक अत्यन्त सफल वकील के घर में पैदा होने वाले सुभाष में बचपन से ही राष्ट्रीयता के भाव भरे हुए थे। विद्यालय में जब एक अध्यापक ने भारत विरोधी बात कही तो सुभाष ने विरोध किया। फलस्वरूप उनको विद्यालय से निष्काषित कर दिया गया पर सुभाष ने क्षमा नहीं माँगी। पिता की इच्छा थी कि सुभाष आई.सी.एस. करे। सुभाष ने आई.सी.एस. पास कर पिता की इच्छा तो पूरी की परन्तु आजादी के दीवाने से ब्रिटिश गुलामी सहन नहीं हुयी और उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। गाँधी के सम्पर्क में आ वे कांग्रेस से जुड़े और उसके अध्यक्ष भी बने परन्तु सरदार भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों की रिहाई के लिए अंग्रेजों पर दवाब डालने हेतु 'समझौते' को रद्द कर देने के सुभाष के सुझाव को न मानने से उनके गाँधी जी से मतभेद हो गए। अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल ११ बार कारावास की सजा दी गई थी। सबसे पहले उन्हें १६ जुलाई १९२१ को छह महीने का कारावास दिया गया था। १९४१ में एक मुकदमे के सिलसिले में उन्हें कलकत्ता की अदालत में पेश होना था, सुभाष ने अपनी सोच के अनुसार जीवन का अधिकांश भाग जेलों में बिताना अनुपयोगी समझा और नजरबन्दी के दौरान अंग्रेजों के १४ जासूसों की आँख में धूल झोंक कर लगभग आधी दुनिया का चक्कर लगा जापान पहुँच कर 'आजाद हिन्द फौज' का नेतृत्व सँभाल लिया।

अंडमान निकोबार के नागालैण्ड और मणिपुर में आजाद हिन्द फौज ने अपना परचम लहराने में सफलता प्राप्त की। परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान तथा जर्मनी की हार के बाद नेताजी ने जापान छोड़ दिया और स्थापित मान्यता के अनुसार ताइवान में हवाई जहाज की दुर्घटना में उनका निधन हो गया। परन्तु अनेक लोगों का मानना है कि उस 'प्लेन क्रेश' में नेताजी की मृत्यु नहीं हुयी। और यह धारणा निराधार भी नहीं है।

माँ भारती के इस अद्‌भुत पराक्रमी लाल की मृत्यु के सम्बन्ध में अभी तक कोई निश्चित मत न बन पाना दुर्भाग्य की बात है। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा' के नारे के जनक के अंतिम दिनों को उजागर करने में आजाद भारत की सरकारों की यह उदासीनता खलती है, चुभती है।

नेताजी की मृत्यु के रहस्य को लेकर अब तक यूँ तीन आयोग बन चुके हैं पर अभी तक रहस्य पर बादल छाये ही हुए हैं। शाहनवाज खान आयोग ने नेताजी के साथी तथा उनके साथ अंतिम प्लेन यात्रा में सहयात्री कर्नल हबीबुर्रहमान की गवाही पर विश्वास कर माना है कि उस प्लेन क्रेश में नेताजी की मृत्यु हो गयी।

परन्तु इस गवाही पर अनेक प्रश्नचिह्न भी लगे हैं। हबीबुर्रहमान का कहना था कि अपने होश खोने पूर्व उन्होंने नेताजी को पेट्रोल से भीगे देखा तथा उनके कपड़ों ने आग पकड़ ली थी। जिनको इस कमीशन की रिपोर्ट पर ऐतराज है उनका कहना है कि शाहनवाज तथा खोसला कमीशन (द्वितीय कमीशन) ने तो दुर्घटना स्थल पर जाने की जहमत भी नहीं उठायी। उनका कहना है कि जिस घड़ी को नेताजी की कहकर बताया गया है वह उनकी नहीं है क्योंकि उनकी घड़ी गोल डायल की ओमेगा

गोल्ड थी। जिस डॉक्टर ने मृत्यु प्रमाणपत्र जारी किया उसने कभी पूर्व में नेताजी को अथवा उनके चित्र को भी नहीं देखा था अतः उसकी गवाही विश्वसनीय नहीं है तथा घटना के जो फोटोग्राफ हैं वे बयान की गयी दुर्घटना का समर्थन नहीं करते हैं।

गाँधी जी के बयान से भी यह गुत्थी उलझी

१९६७ की रिपोर्ट से ऐसी ही एक फाइल सामने आई है जिसके अनुसार १८ अगस्त १९४५ में ताईहोकू के प्लेन क्रैश में बोस की कथित तौर से मृत्यु के बाद महात्मा गाँधी ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि उन्हें लगता है कि नेताजी जिन्दा हैं। बंगाल में एक प्रार्थना सभा में दिए इस वक्तव्य के चार महीने बाद एक लेख छपा था जिसमें गाँधीजी ने माना था कि इस तरह की निराधार भावना के ऊपर भरोसा कतई नहीं किया जा सकता।

१९४६ की एक गुप्त फाइल के अनुसार गाँधीजी ने अपनी इस भावना को 'अन्तर्मन' की आवाज कहा था लेकिन कांग्रेसियों को लगता था कि उनके पास हो न हो कुछ गुप्त सूचना है। फाइल में यह भी लिखा गया था कि एक गुप्त रिपोर्ट कहती है कि नेहरू को बोस की एक चिट्ठी मिली है जिसमें उन्होंने बताया है कि वह रूस में हैं और भारत लौटना चाहते हैं। हो सकता है कि जब गाँधी ने सार्वजनिक तौर पर बोस के जिन्दा होने की बात कही थी उसी दौरान यह चिट्ठी भेजी गई हो। नेताजी के परिवार से चन्द्र बोस का कहना है कि महात्मा गाँधी को जरूर कुछ पता था क्योंकि गाँधी ने कहा था कि बोस परिवार को उनका श्राद्ध नहीं करना चाहिए क्योंकि उनकी मौत को लेकर एक प्रश्नचिह्न लगा हुआ है।

सुब्रमण्यम स्वामी ने तो बाकायदा दावा भी किया है कि नेताजी की मौत के पीछे रूस का हाथ था। उनका आरोप है कि द्वितीय विश्वयुद्ध में आजाद हिन्द फौज की हार के बाद जब नेताजी रुस पहुँचे तो नेहरू के कहने पर स्टालिन ने उन्हें बन्दी बना लिया था, जिसके बाद उन्हें साइबेरिया में फांसी दे दी गई थी। ऐसा दावा करते हुए सुब्रमण्यम स्वामी यह आरोप भी लगाते हैं कि नेताजी के परिजनों की जासूसी किये जाने के पीछे नेहरू का ही हाथ था। वे कहते हैं, 'नेहरू को स्टालिन पर यकीन नहीं था, यही वजह है कि नेताजी की मौत की सूचना मिलने के बाद भी उन्होंने नेताजी के परिजनों की जासूसी जारी रखी।' (हाल में सार्वजनिक की गयीं फाइलों से यह स्पष्ट हुआ है कि बोस परिवार के सदस्यों की जासूसी होती रही)

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस पर रिसर्च करने वाले अनुज धर का दावा है कि आजादी के बाद सोवियत संघ में भारत की पहली राजदूत विजय लक्ष्मी पंडित जानती थीं कि नेता जी सोवियत संघ की कैद में थे। साल २०१३ में मास्को के रामकृष्ण मिशन के तत्कालीन प्रमुख स्वामी ज्योतिरूपानन्द ने भी दावा किया था कि विजयलक्ष्मी पंडित को सोवियत संघ ने एक खिड़की से जेल में बन्द नेता जी को देखने का मौका भी दिया था, लेकिन बाद में विजयलक्ष्मी पंडित ने खोसला आयोग के सामने शपथपत्र देकर नेता जी के बारे में जानकारी होने से इंकार कर दिया था।

कलकत्ता यूनिवर्सिटी के डॉ. सरोज दास ने भी दावा किया था कि विजयलक्ष्मी पंडित के बाद सोवियत संघ में भारत के राजदूत बने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने भी उन्हें बताया था कि १९४८ में वो मास्को में नेता जी से मिले थे। इन दावों की सच्चाई अब तक कोई नहीं जानता है, लेकिन अगर सोवियत संघ में भारत के राजदूत रहीं दो बड़ी हस्तियाँ नेता जी के रूस में होने की बात जानतीं थीं तो मुमकिन है कि उन्होंने भारत सरकार के पास रिपोर्ट भी भेजी हो। सवाल ये है कि क्या इसीलिए कई मुल्कों से रिश्ते खराब होने की दलील देकर अब तक की सरकारें नेता जी से जुड़ी सीक्रेट फाइलों को सार्वजनिक करने से कतरातीं रहीं हैं।

अनुज धर का यह भी कयास है कि उत्तर प्रदेश के गुमनामी बाबा ही नेताजी थे। नेताजी की भतीजी ने गुमनामी बाबा के २३ ताले लगे बक्सों में नेताजी की ओमेगा गोल्ड घड़ी देखी थी। पूर्व पत्रकार अनुज धर की पुस्तक 'व्हाट हैपेंड टू नेताजी?' में बोस के जीवन के रहस्य के फैजाबाद पहलू पर गौर किया है। उनकी मौत के तीन प्रमुख सिद्धान्तों का ब्योरा है। धर ने कहा, 'सरकार के संपर्क में रहे एक उच्च पदस्थ सूत्र ने मुझे बताया कि भारत के प्रधानमंत्री के पास एक अति गोपनीय फाइल थी जिसमें बोस का रहस्य छिपा हुआ था।'

Gumnami Baba Subhash Chandra Bose

नेताजी से जुड़े रहस्यों पर १५ साल तक छानबीन करने वाले इस लेखक के मुताबिक उस फाइल में यह स्वीकारोक्ति है कि फैजाबाद के साधु भगवानजी असल में बोस थे और इसलिए सरकार ने उनसे सम्पर्क बनाए रखा था। धर ने लिखा है, 'उत्तर प्रदेश राज्य और केंद्रीय मंत्रियों सहित गुप्तचरों तथा खुफिया अधिकारी उन्हें शिष्टाचार के तौर पर, विभिन्न विषयों पर उनकी सलाह लेने और उन पर नजर रखने के लिए भेजे जाते थे।' इस किताब में यह भी दावा किया गया है कि भगवानजी के दाँत की डीएनए जाँच के नतीजे में अधिकारियों ने हेरफेर की। नवीन सार्वजनिक किये दस्तावेजों के बारे में कहा जा रहा है कि इन फाइलों से पता चलता है कि नेताजी १९६४ के साल तक जिन्दा थे। १९६० के दशक की शुरुआत में अमेरिकी खुफिया रिपोर्ट में इस बात का इशारा किया गया था कि नेताजी फरवरी १९६४ में भारत आए होंगे। उनकी मौत के १९ साल के बाद।

यहाँ इस सम्बन्ध में गठित तीसरे मुखर्जी आयोग की चर्चा कर ली जाय जिसके सदस्य ताइवान गए। ताइवान सरकार ने १८ अगस्त १९४५ को कोई हवाई दुर्घटना होने से इंकार कर दिया। मुखर्जी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में विमान हादसे में नेताजी की मौत को खारिज कर दिया तथा कहा कि मामले में आगे और जाँच की जरूरत है... मुखर्जी आयोग ने ८ नवम्बर, २००५ को अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को सौंपी थी, जिसे १७ मई, २००६ को संसद में पेश किया गया, लेकिन सरकार ने रिपोर्ट को मानने से इनकार कर दिया...

भारत सरकार ने १८ अगस्त १९४५ को दुर्घटना होने व उसमें नेताजी की मृत्यु होने को स्वीकार किया है।

जिन दस्तावेजों को सार्वजनिक किया गया है उनमें छह फरवरी १९९५ का एक कैबिनेट नोट है, जिसपर तत्कालीन गृह सचिव के पद्मनाभैया के हस्ताक्षर हैं। उसमें कहा गया है, 'इस बात के लिए तनिक भी संदेह की गुंजाइश नहीं है कि उनकी १८ अगस्त १९४५ को ताईहोकू में विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। भारत सरकार ने पहले ही इस रुख को स्वीकार कर लिया है। इसका खण्डन करने के लिए कोई सबूत नहीं है।'

इधर लखनऊ उच्च न्यायालय की एक पीठ ने १९ वर्ष पुरानी याचिका पर विचार कर जाँच दल बनाने का निर्णय दिया है। जस्टिस देवी प्रसाद सिंह और जस्टिस वी. के दीक्षित की बेंच ने कहा है कि गुमनामी बाबा के रामभवन आवास से मुखर्जी आयोग ने जो चीजें एकत्र की थीं उनमें और नेताजी की वस्तुओं में समानता है। याचिकाएँ नेताजी के भाई सुरेशचन्द्र बोस की बेटी ललिता बोस, आल इंडिया सोशलिस्ट पार्टी के उपाध्यक्ष डॉ. एएम हलीम और ऑल इंडिया सुभाष मुक्ति वाहिनी के उपाध्यक्ष विश्व बांधव तिवारी ने दायर की थीं।

बेंच के मुताबिक जाँच दल में हाईकोर्ट के एक सेवानिवृत्त जज, अधिकारी और विशेषज्ञों को शामिल किया जा सकता है। तीन माह में यह दल बनाया जा सकता है। बेंच ने कहा है कि मुखर्जी आयोग की रिपोर्ट पर कार्रवाई न करने और जापान के टोक्यो स्थित रेनको जी मंदिर में रखी अस्थियों का डीएनए टेस्ट नहीं कराने का केन्द्र का निर्णय समझ से परे है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नेताजी के अंतिम समय के घटनाक्रम पर अभी भी धुंध छायी है और यह भी सत्य है कि एक महान् सेनानी के बारे में सम्पूर्ण सत्य देश को जानने का अधिकार है। परन्तु अंतिम समय की उलझी गुत्थी से सुभाष चन्द्र बोस की महानता पर रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ता। आजाद हिन्द फौज के रूप में नेताजी ने एक ऐसा उद्योग किया जिसने अंग्रेजों की जड़ें उखाड़ दीं। नेताजी की फौजें ब्रिटिश फौज में अपने देशवासियों पर बम के गोले नहीं तोपों से पर्चे फेंकतीं थीं जिनमें देशभक्ति की बातें लिखी होती थीं और उनका आह्वान करती थीं कि वे भी नेताजी की फौज में शामिल हो जाएँ। इस का व्यापक असर पड़ा और अनेक भारतीय फौजियों ने ब्रिटिश हुकूमत से बगावत करके आई. एन. ए. की तरफ से लडाई लड़ी। एयर फोर्स तथा नेवी में भी बगावत हुई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चूलें हिल गयीं और उसे सन् १८५७ की भयावह स्मृति हो आई। अन्दर ही अन्दर विदेशी हुकूमत ने भारत छोड़ने का निश्चय कर लिया किन्तु दुर्भाग्य से जापान की पराजय हो गई और नेताजी को जापान छोड़ना पड़ा। और आजादी की सुबह टल गई।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

नारी उत्थान और ऋषि दयानन्द के बीच पंडिता रमाबाई के कतिपय प्रसंग।

''आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही।''

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना में वेद भगवान् ने नारी को राष्ट्राधार कहा है। ऋषि दयानन्द के हृदय में नारी उत्थान तथा नारी शिक्षा की जो ज्वाला जल रही थी उसका प्रत्यक्ष दिग्दर्शन ऋषि दयानन्द के जीवन के कतिपय प्रसंगों से स्पष्ट हो जाता है। कोई स्त्री संस्कृत में धाराप्रवाह प्रवचन कर भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता में विद्वता का सिक्का जमाकर विद्वानों को महाश्चर्य में डाल दे और ऋषि दयानन्द यह सुनकर और जानकर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करें, यह कतई संभव नहीं था।

पंडिता रमाबाई का जन्म एक वेदान्त के प्रकाण्ड पंडित अनन्त पद्मनाभ डोगरे के घर हुआ था। उनकी माता लक्ष्मीबाई भी विदुषी थीं। पत्नी को संस्कृत पढ़ाकर विदुषी बनाने के जुर्म में जातीय ब्राह्मणों द्वारा सामाजिक बहिष्कार के शिकार डोगरे जी अपना गाँव छोड़ गंगामूल की पहाड़ियों में आश्रम बनाकर रहने लगे, जहाँ २३ अप्रैल १८५८ को रमाबाई का जन्म हुआ था। पंडित डोंगरे जी तीर्थयात्रा को निकले और यात्राक्रम में ही १८७४ में उनकी मृत्यु हो गई। एक महीने बाद उनकी पत्नी और कन्या कृष्णा भी कालकलवित हो गईं। किन्तु रमाबाई तीर्थयात्रा अपने भ्राता श्री निवास के साथ जारी रखती हुई ४००० मील की यात्रा कर १८७८ में कलकत्ता पहुँची। २० वर्षीय युवती रमा को संस्कृत के १८००० श्लोक कंठाग्र थे और संस्कृत में धाराप्रवाह भाषण देने में निष्णात थी। यह संस्कार रमाबाई को अपनी विदुषीमाता लक्ष्मीबाई से ही प्राप्त हुआ था। दो वर्षों तक संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण कर कलकत्ता जैसी महानगरी में अपने विद्वता का सिक्का जमा चुकी थी। फलस्वरूप पंडिता रमाबाई की चर्चा सम्पूर्ण देश में होने लगी। स्वामी दयानन्द जो उस समय जून १८८० में मेरठ में आर्य समाज के मंत्री के आग्रह पर प्रचार कार्य हेतु आये हुए थे और मुंशी रामशरण दास की कोठी में ठहरे हुए थे, उन्होंने रमाबाई की प्रशंसा सुनकर पहला पत्र लिखा। पत्र में स्वामी दयानन्द की भावना एवं नारी उत्थान तथा राष्ट्रप्रेम की झलक स्पष्ट रूप से मिलती हैः-

'स्वस्ति, श्रीमती श्रेष्ठोपमार्हा श्रुतशास्त्रा विद्याभ्यासापन्ना श्रीयुता रमा के प्रति दयानन्द सरस्वती स्वामी की आशीर्वादें अतिशय करके हों। यहाँ कल्याण है आशा है कि आप भी वहाँ सदा कल्याण से वर्द्धित हो रही होंगी।

संस्कृत विद्या का अभ्यास की हुई आपकी कीर्ति सुनकर मन में आनन्द हुआ। श्रीमती पर पत्र द्वारा अपना अभिप्राय प्रकाश कर, आपका भी अभिप्राय इसी प्रकार जानना चाहता हूँ। आशा है कि आप शीघ्र अपना अभिप्राय प्रकाश कर मुझे अलंकृत कीजिएगा। अब और आगे आप क्या-क्या करना चाहती हैं। जैसे लोकश्रुति है कि आप ब्रह्मचारिणी हो, क्या यह ऐसा है वा नहीं? आप जहाँ-तहाँ सभाओं में सुशोभित, शास्त्रोक्त लक्षण और प्रमाणों से युक्त विद्वानजनों के आह्लाद करने वाली वक्तृताओं को करती हैं, यह ठीक है वा नहीं।

मैंने सुना है कि आप विवाह के लिए स्वयंवर विधि से अपने

तुल्य गुण कर्म-स्वभाव वाले कुमार उत्तम पुरुष को ढूँढ़ रही हैं, यह सत्य है वा नहीं? क्या विवाह करने के विना ब्रह्मचर्य में रहना अशक्य है? जैसे आर्यावर्तीय सती विदुषी गार्गी आदि कुमारियों ने ब्रह्मचर्य में स्थित होकर स्त्रीजनों का जितना सुख लाभ कराया है वैसा उतना सुख आप विवाह करने पर अनेक प्रतिबन्धों के कारण प्राप्त नहीं करा सकेंगी। ऐसा होने पर आपकी क्या इच्छा है कि स्वसमान वर पुरुष को प्राप्त कर विवाह करें और जैसे अनेक स्त्रियैं सन्तानोत्पत्ति पालन स्वगृहकृत्य के अनुष्ठान में प्रवृत्त होती हैं वैसे आप भी प्रवृत्त हों वा यह इच्छा है कि कन्याओं को पढ़ावें और स्त्रियों को सुशिक्षा करें।

श्रीमती बंगदेश में रहकर और स्थानों पर यात्रा नहीं करतीं इसमें क्या कारण है? मेरा निश्चय है कि जितना उपकार सर्वत्र गमन आगमन से हो सकता है उतना एक स्थान में रहने से नहीं हो सकता। यदि यहाँ आने की इच्छा हो तो आ जाइये। इस यात्रा में जितना धन व्यय रास्ते में होगा उतना आपको यहाँ मिल जावेगा। यदि यहाँ आना हो तो चलने से पूर्व पत्र द्वारा समय की सूचना दें यतः यहाँ आपकी स्थिति के लिए स्थान आदि का प्रबन्ध हो जावे।

यदि श्रीमती की इच्छा हो कि सर्वत्र उपदेश के लिए यात्रा करें तो आर्यावर्त्त में सर्वत्र यात्रा के अर्थ और योगक्षेम के लिए इस स्थान के निवासी आर्यपुरुष आपको धन दे सकते हैं, इसमें कुछ भी शंका नहीं। यदि आप पत्र भेजें अथवा आवें तो निम्नलिखित स्थान की सूचना के अनुसार पत्र भेजें वा आप आवें। विदुषी के प्रति अधिक लेख से क्या?

प्रस्तुत पत्र में स्वामी जी की भावनाओं की स्पष्ट झलक मिलती है, स्त्रियों के उत्थान एवं शिक्षा व्यवस्था के प्रति कितनी तड़प है स्वामी जी के हृदय में। भारतवर्ष की अधिकाधिक नारियाँ सुशिक्षित तथा संस्कार सक्षम हों पंडिता रमाबाई के अथक प्रयत्न से, इसके लिए एक विदुषी नारी को ब्रह्मचारिणी होने का संदेश देकर गार्गी जैसी तेजस्विनी और परम विदुषी स्त्री की कोटि में आने की प्रेरणा देते हैं। सारा भारतवर्ष रमाबाई की विद्वता से लाभ उठा सके और इस विदुषी नारी की ख्याति सर्वत्र फैले, इसके लिए स्वामी जी स्पष्ट रूप से बंगदेश छोड़कर सर्वत्र गमनागमन करने की प्रेरणा देते हुए मार्ग व्यय की जिम्मेदारी भी स्वयं लेते हैं। स्वामी जी का मूल लक्ष्य था नारी उत्थान, नारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार तथा देश में सुयोग्य माताओं का निर्माण ताकि पुत्र भी सुयोग्य माँ द्वारा निर्मित होकर राष्ट्रोत्थान में सहभागी बनें।

स्वामी जी द्वारा २८ जून १८८० को लिखे गये इस पत्र का जवाब पंडिता रमाबाई ६ जुलाई १८८० को इस प्रकार देती हैंः-

'श्रीमान् जिन्होंने द्युलोक और पृथिवी में अखण्ड ज्ञान और विज्ञान का सूर्य प्रकाशित किया उन श्री श्री दयानन्द सरस्वती स्वामी के पादप्रान्तों में अनेक प्रणाम के साथ और सम्यक् उदाचार और उचित सन्मान के साथ निवेदन हैः-

हे आर्यपाद! अभी श्रीमत्पादों के अनुग्रहयुक्त अनुकम्पासूचक पत्र को पाकर दुःसह शोक आदि तापों से दग्ध हुआ भी मेरा हृदय अमृत से सींचे गए के समान शान्ति को प्राप्त हुआ। श्रीमत्पादों का देव दुर्लभ अनुग्रह कहाँ और महान् पुरुषों के पादरज की कणिका की उपमा के भी अयोग्या यह बराकी (बेचारी) कहाँ? और इस दासी में आप श्रीमानों के अनुग्रह प्राप्ति की आशा ही कहाँ? यह तो मुझ जैसे अकिंचित्कर जन पर दया करने वाले महान् पुरुषों की अनुपम परम उदारता ही सर्वत्र जय पा रही है। क्योंकि सत्पुरुषों की सर्वत्र दया समान होती है वहाँ नीच उच्च की गणना नहीं। क्या वृक्ष की शाखायें पदाश्रित अत्यन्त नीच पर से कभी अपनी छाया को हटा लेती हैं?

आज मुझे आर्यावर्त्त में आये प्रायः तीन चार वर्ष हुए तब से मैं श्रीमत्पादों के ज्ञान गौरव को बराबर सुनती रही और आपके चरणों के दर्शन के लिए मन अतीव उत्सुक था। परन्तु इतने काल तक इस संशय के दोला पर आरुढ़ मन ने हृदय उत्साह के वेग को रोके रखा कि न जाने चतुर्थ आश्रम में स्थित श्रीमत्पाद इस बालबुद्धि मुझ स्त्री पर दर्शनदान के प्रसाद से कृपा करेंगे वा नहीं? आज भवत्पादों के पत्र ने मेरे संशय के अंधकार को दूर कर दिया।

महत्पादों ने मेरा वृत्त और अभिलाषा पूछी है, जनप्रवाद के अनुसार आज पर्यन्त मैं कुमारी हूँ। मेरी अभिलाषा है कि

यावज्जीवन मैं कुमारी रहूँ। परन्तु नहीं जानती कि भविष्यत्काल में प्रबल विधि के नियोगवश से क्या होगा? सनातन भारतवर्ष की भूषण स्त्रीरत्न गार्गी आदि आजन्म ब्रह्मचारिणी और ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ जैसी स्वजाति और स्वदेश की उन्नति साधती थीं, यह स्पष्ट है कि उनकी उपमावाले महत्तम काम का नाम ग्रहण भी मुझ वालिशमति बालिका मात्र में शोभा नहीं देता। वह नहीं सही, परन्तु नाना देशों के पर्यटन से और श्रीमत्पादों के सदृश अति बुद्धिमान महापुरुषों के दर्शन से कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहती हूँ।

प्रायः दो वर्ष तक वंगदेश और रमणीयतर ब्रह्मपुत्र के पुलिन (रेतले किनारे) और बड़े पर्वतों के वन विभागों से परिवेष्ठित आसाम में प्राकृत सौन्दर्य से आकर्षित दृष्टिवाली सहोदर के साथ में रही थी। अब श्रीमत्पादों की सेवा में निवेदन करते हुए मेरा हृदय विदीर्ण होता है कि आज अढ़ाई मास हुए कि सहोदर भ्राता आजन्म सहचर लोकान्तर को पधारे। अब मैं उसके दुःसह शोक से व्याकुल हृदय होकर कुछ काल तक निभृत (एकान्त) स्थान पर रहना चाहती हूँ और आशा करती हूँ कि ऐसा करने पर चित्त स्थिर हो जावेगा।

इतने में मास वा डेढ़ मास के पश्चात् श्रीमत्पादों के दर्शन से जन्म को कृतार्थ करूँगी। श्रीमत्पादों की सेवा में अधिक लेख से अलम् करके आज यहीं बस करती हूँ।

इतिशिवम्
श्रीमत् चरणरेणु
रमा का

प्रस्तुत पत्र में रमाबाई के दिल में ऋषि दयानन्द के प्रति कितनी भक्ति थी स्पष्ट है। रमाबाई इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि स्वामी दयानन्द अपनी सभा में स्त्रियों को

आने अथवा स्वयं से वार्तालाप करने से निषेध करते हैं। और जब रमाबाई को स्वामी जी का प्रथम पत्र प्राप्त हुआ तो कितनी प्रसन्न हुई थी रमाबाई और आह्लादित हो अपने पत्र में स्पष्ट लिखती है कि 'श्रीमत्पाद इस बालबुद्धि मुझ स्त्री पर दर्शन दान के प्रसाद की कृपा करेंगे या नहीं। इस संशय के दोलापर आरुढ़ मन ने हृदय उत्साह के वेग को रोक रखा था।'

रमाबाई ऋषि के दर्शन तथा ऋषि से ज्ञानामृत पाने के लिए कितना उत्सुक थी पत्रांश के इस पंक्ति से स्पष्ट है कि 'श्रीपाद के ज्ञान गौरव को सुनती रही और आपके चरणों के दर्शन के लिए मन अतीव उत्सुक था। श्रीमत्पादों के सदृश अति बुद्धिमान महापुरुषों के दर्शन से कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहती हूँ।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस पत्र का उत्तर देते हुए २१ जुलाई १८८० को रमाबाई के जन्म स्थान तथा परिजनों के बारे में पूछा था और अपना जीवनवृत्त लिखने हेतु आग्रह किया था साथ ही मेरठ में रमाबाई के व्याख्यान तथा स्त्रीशिक्षा के कार्यक्रम में योगदान हेतु पुनः प्रेरित किया था। ऋषि दयानन्द के दूसरे पत्र को पाकर पंडिता रमाबाई मेरठ आने के लिए बिल्कुल तैयार हो गई तथा इस संदर्भ में स्वामी जी को एक पत्र १ अगस्त १८८० को लिखा था जो इस प्रकार है।

'जिन श्रीमानों ने समस्त लोक को अनवद्य और उदार सुजनता के गुण में झुका दिया है उन श्रीदयानन्द सरस्वती स्वामी के पादप्रान्तों में विहित अनेक प्रणाम सम्यक् उदाचार और उचित सम्मान के साथ यह निवेदन है-

आर्यपाद! श्रीमानों के भेजे दो अनुग्रह पत्रों को यथासमय पाकर मैं अत्यन्त आह्लादित हूँ परन्तु आज तक उनके उत्तर देने में अपने दुर्भाग्य से असमर्थ रही। इसका कारण सिर की बड़ी पीड़ा और ज्वर था। अब श्रीमत्पादों के दर्शनार्थ पूर्व रात्रि के अढ़ाई मुहूर्त व्यतीत होने पर वाष्पीय यान में चढ़कर चलने की इच्छा है। और श्रीमानों की आज्ञानुसार यह समाचार पहले ही पत्र द्वारा सूचित कर देती हूँ।

अब श्रीमत्पादों ने जो मेरा वृत्त पूछा है वह निम्नलिखित हैः-
भारतवर्ष के दक्षिण पश्चिम दिशा में श्रीमत् मैसूर राजा के देश में जो सह्य पर्वत है उसकी चोटी पर गंगामूल नाम स्थान में मेरा जन्म हुआ। २२ वर्ष आयु व्यतीत हो गई अब २३ वां वर्ष वर्तमान है। श्रीमान् मेरे अध्ययन की सीमा तो साधारणतः क च ट त प आदि वर्ण पर्यन्त ही अनुमान कर लें। इससे अन्य कुछ भी कहने का उत्साह नहीं होता है, मैंने

कोई विदेशीय भाषा नहीं पढ़ी। निज आवास पूर्व लिखित मैसूर देश में ही जन्म स्थान से कुछ दूरी पर पर्वत की उपत्यका में है और वंश भी वहाँ ही अल्पशेष है। माता पिता लोकान्तर को पधार गए हैं। अब जो भ्राता मरा है वह मुझसे छः वर्ष बड़ा था। वंश में केवल सौतेले दो भाई हैं। अब कोई भी सजातीय जन मेरे पास नहीं है। केवल एक परिचारिका, एक भृत्य तथा एक कृतज्ञ भ्राता साथ है।

श्रीमत्पादों की कृपा से मार्गधन है। चार पाँच दिनों के भीतर ही श्रीमत्पादों के दर्शन से अपना जन्म कृतार्थ करूँगी यही संकल्प है। आगे दैवेच्छा।

श्रीमत्पादों के प्रति अधिक से क्या, इति।

नितान्त अनुग्रहीत

रमा

इस पत्र व्यवहार के पश्चात् रमाबाई मेरठ आ गई। वह संस्कृत की पंडिता थी। संस्कृत धाराप्रवाह बोलती थी। रमाबाई के पास उस समय एक सेवक, एक सेविका और एक बंगाली महाशय थे, जिसे रमाबाई ने पत्र में कृतज्ञ भ्राता कहा है। रमाबाई मेरठ में आर्यसमाज के सदस्य बाबू छेदीलाल साहब की कोठी पर ठहरी। इसमें कोई शक नहीं कि उस समय की स्त्रियों की तुलना में रमाबाई संस्कृत विद्या में निष्णात थी और व्याख्यान देने में तो जगद्विख्यात थी। पंडिता रमाबाई ने स्त्रीशिक्षा के विषय में अनेकों व्याख्यान दिए। कुछ व्याख्यान बाबू छेदीलाल की कोठी पर तथा अधिकांश व्याख्यान आर्य समाज और मेरठ के अन्य स्थानों पर। उन दिनों पंडित भीमसेन, पंडित ज्वालादत्त जी, पालीराम जी और श्रीमान् ज्योतिस्वरूप जी ने स्वामी जी से वैशेषिक दर्शन पढ़ना प्रारम्भ किया था। उन्हीं विद्वानों के साथ पंडिता रमाबाई भी दर्शनशास्त्र पढ़ा करती थी। स्वामी जी के उपदेश के समय भी पंडिता रमाबाई महर्षि के सामने बैठ निर्मिमेष महर्षि की दिव्य भव्य मूर्ति का अवलोकन करती हुई उपदेशामृत का पान करती रहती थी। स्वामी जी को रमाबाई से बहुत आशाएँ थीं। वे रमाबाई का उपयोग करना चाहते थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्त्रीशिक्षा के द्वारा स्त्रियों में आर्ष ग्रन्थों तथा वैदिक संस्कारों के प्रचार-प्रसार के लिए। इसीलिए स्वामी जी सामने बिठाकर उपदेश सुनने का अवसर रमाबाई को देते थे। एक वार्तालाप के क्रम में ऋषि दयानन्द ने रमाबाई से स्पष्ट कहा- 'आपको छोड़कर मैंने आज तक सामने बिठाकर किसी स्त्री को उपदेश नहीं किया। आपको सामने बिठाकर उपदेश सुनने का अवसर केवल इसलिए दिया कि आप बड़ी पंडिता हैं। संभव है कि मेरे वचन सुनकर आप सारा जीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके अपने जीवन को स्त्रियों के उद्धार में लगा दें।' रमाबाई को यह उपदेश अच्छा नहीं लगा और रमाबाई ने प्रत्युत्तर में कहा- 'महाराज गृहस्थ लोग भी तो उपकार का काम कर सकते हैं।' स्वामी जी ने कहा गृहस्थ के धंधों में फंसकर मनुष्य उतना उपकार का काम नहीं कर सकता। लेकिन रमाबाई ने स्वामी जी की इन बातों को कोई महत्व नहीं दिया।

स्वामी जी को रमाबाई के आचरण के सम्बन्ध में कुछ संदेह हो गया और उन्हें संभवतः यह भी पता लग गया था कि जिसे रमाबाई कृतज्ञ भ्राता कह अपने साथ लाई थी वह उसका प्रेमी वही बंगाली कायस्थ था जिससे वह विवाह करना चाहती थी और उसके जो भी परिजन थे वे इसका विरोध कर रहे थे। स्वामी जी ने रमाबाई से जो आशाएँ की थी वह पूरी नहीं हुईं। वह विदुषी अवश्य थी पर उसका चरित्रबल उच्च कोटि का नहीं था। स्वामी दयानन्द ने रमाबाई के चरित्र के विषय में बाबू दुर्गाप्रसाद को इस प्रकार लिखा था। 'इसकी कुछ कुचाली हो गई है ऐसा लोग संशय करते हैं। चित्त भी चंचल है। गुस्सा भी बहुत है। इसकी कुचाली में जो लोग शंका करते हैं वह लिखने योग्य नहीं है।'

विद्वता की तुलना में स्वामी जी चरित्र को कितना अधिक महत्व देते थे यह पंडिता रमाबाई के इस प्रसंग से स्पष्ट हो जाता है- पंडिता रमाबाई और महर्षि दयानन्द की विचारधाराओं की मौलिक प्रतिकूलता ने रमाबाई को आर्य समाज से नाता तोड़ने पर बाध्य कर दिया। और वह लगभग एक माह तक स्वामी जी का उपदेश सुनकर तथा पढ़कर कलकत्ता लौट आयी। रमाबाई को वापस लौटते समय स्वामी दयानन्द ने अपनी समस्त पुस्तकों की एक-एक प्रति भेंट की तथा आर्य समाज ने रमाबाई की यात्रा व्यय और उत्साहवर्ध्य हेतु १२५ रु. और १० रु. का मूल्यवान थान भी भेंट किया।

उपर्युक्त प्रसंगों तथा पत्राचार की मूल भावनाओं का आंकलन करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि नारी के प्रति जितने संवेदनशील और सजग ऋषि दयानन्द थे, शायद ही कोई अन्य महापुरुष समाज सुधारक इस दिशा में इतने सजग और संवेदनशील रहे होंगे।

काश! यदि पंडिता रमाबाई महर्षि की बात मानकर उनके निर्देशानुसार कार्य करती तो आज पंडिता रमाबाई समस्त जनमानस के हृदयाकाश में उसी प्रकार चमकती जैसे सीता-सावित्री-गार्गी-मैत्रेयी-अरुन्धती आदि स्त्रियाँ चमक रही हैं।

- उमाशंकर आर्य
प्राचार्य,महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल मंदिर
तेघड़ा, बेगूसराय (बिहार) पिन- ८५११३३
चलभाष-०९९०५४१६८९०

पाञ्चजन्य घोष हृषीकेश फिर से गुँजाओ

पाञ्चजन्य घोष हृषीकेश फिर से गुँजाओ।
माँ भारती को कौरवों से मुक्त कराओ,
ये केश-वेश द्रौपदी के पुनः खुल गये।
वध कराके दु:शासन का इन्हें फिर से बँधाओ।। १।।
वंशीधर अब वंशी बजाने का समय नहीं,
संग ग्वाल-बालों के यहाँ खेल का नहीं।
चक्रधारी अब तो सुदर्शन चक्र उठाओ ।। २।।
शकुनि के कपट पाश निशङ्क पड़ रहे,
अति हर्ष में दुर्योधन कर्ण खूब हँस रहे।
उस दुष्ट का वध शीघ्र सहदेव से कराओ।। ३।।
कर्ण की कुमंत्रणा की अब बेल फैल रही,
सन्मंत्रणा विकर्ण विदुर की नहीं रही।
कह पार्थ को अब तो उसका शिरच्छेद कराओ ।। ४।।
गोहरण जैसे कृत्य में संग भीष्म द्रोण हैं,
दुर्योधन जैसे दुष्ट के ये दास बने हैं।
इस पापमयी भावना से मुक्त कराओ।। ५।।
दुर्योधन अन्धपुत्र अब मदान्ध हो गया,
उरु सगर्व खोल वह बेइलाज हो गया।
कह करके भीम से अब उसकी जाँघ तुड़ाओ।। ६।।
काल यवन जरासंध का आतंक बढ़ा है,
कीचक और जयद्रथ का उत्साह चढ़ा है।
नाश करके उन सभी का यह राष्ट्र बचाओ।। ७।।
धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र, युद्धक्षेत्र हो गया,
बन करके पार्थ सारथी अब उसे बचाओ।। ८।।
गीता का गान करके धनञ्जय को जगाया।
स्व-कर्म पालने का उसे पाठ पढ़ाया,
अब राष्ट्र धनंजयों को वह पाठ सुनाओ।
पाञ्चजन्य घोष हृषीकेश फिर से गुँजाओ।।

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा

मनुष्य के शरीर रचना शाकाहारी जीवों जैसी

इस सृष्टि में शाकाहारी व मांसाहारी जीवों की अनेक जातियाँ हैं और बहुत छोटे से लेकर बहुत बड़े आकार तक के विभिन्न प्रकार के जीव हैं, किन्तु सभी शाकाहारी जीवों की शरीर रचना, हाथ, पाँव, दाँत, आँतों आदि की बनावट व उनकी देखने सूँघने की शक्ति व खाने पीने का ढंग मांसाहारी जीवों से भिन्न है । जैसे-

१. मांसाहारी जीवों के दाँत नुकीले व पंजे तेज नाखून वाले होते हैं जिससे आसानी से अपने शिकार को चीर फाड़ कर खा सकें । शाकाहारी जीवों के दाँत चपटी दाढ़ वाले होते हैं, पंजे तेज नाखून वाले नहीं होते जो चीर फाड़ कर सकें

अपितु फल आदि आसानी से तोड़ सकने वाले होते हैं ।

२. मांसाहारी जीवों के निचले जबड़े केवल ऊपर नीचे ही हिलते हैं और वे अपना भोजन बगैर चबाए ही निगलते हैं।

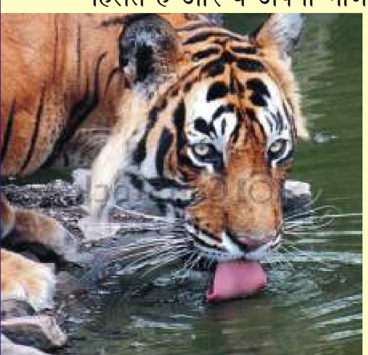

शाकाहारी जीवों के निचले जबड़े ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं सब ओर हिल सकते हैं और ये अपना भोजन चबाने के बाद निगलते हैं ।

३. मांसाहारी प्राणियों की जीभ खुरदरी होती है, ये जीभ बाहर निकाल कर उससे पानी पीते हैं । शाकाहारियों की जीभ चिकनी होती है, ये पानी पीने के लिए जीभ बाहर नहीं निकालते अपितु होठों से पीते हैं ।

४. मांसाहारी जीवों की आँतों की लम्बाई कम, करीब करीब उनके शरीर की लम्बाई के बराबर और धड़ की लम्बाई से ६ गुनी होती है। आँते छोटी होने के कारण वे मांस के सड़ने व विषाक्त होने से पहले ही उसे शरीर से बाहर फेंक देती हैं। शाकाहारी जीवों की आंतों की लम्बाई अधिक, करीब करीब इनके शरीर की लम्बाई से चार गुनी व धड़ की लम्बाई से १२ गुनी होती है, इस कारण वे मांस को जल्दी बाहर नहीं फेंक पातीं ।

५. मांसाहारी जीवों के जिगर (Lever) व गुर्दे (Kidney) भी अनुपात में बड़े होते हैं ताकि मांस का व्यर्थ मादा आसानी से बाहर निकल सके ।

शाकाहारी जीवों के जिगर व गुर्दे छोटे होते हैं और मांस के व्यर्थ मादे को आसानी से बाहर नहीं निकाल पाते।

६. मांसाहारी जीवों के पाचक अंगों में मनुष्य के पाचक अंगों की अपेक्षा दस गुना अधिक हाइड्रोक्लोरिक एसिड होता है जो मांस को आसानी से पचा देता है। शाकाहारी जीवों के पाचक अंगों में हाइड्रोक्लोरिक एसिड कम होता है व मांस को आसानी से नहीं पचा पाता।

७. मांसाहारी जीवों की (Saliva) लार अम्लीय होती है। शाकाहारी जीवों की लार क्षारीय होती है व उनकी लार में (Ptyalin) टायलिन रसायन जो कार्बोहाइड्रेटस को पचाने में उपयोगी होता है, पाया जाता है।

८. मांसाहारी जीवों का Blood pH (खून की एक रसायनिक स्थिति) कम होता है यानि उसका झुकाव अम्लीय होता है। शाकाहारी जीवों का Blood pH अधिक होता है यानि उसका झुकाव क्षारीय की ओर होता है।

९. मांसाहारी जीवों के Blood lipoproteins अलग किस्म के होते हैं। शाकाहारी पशुओं व मनुष्य के Blood lipo-proteins एक से होते हैं व मांसाहारी जीवों से भिन्न होते हैं।

१०. मांसाहारी जीवों की सूँघने की शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है, आँखें रात्रि में चमकती हैं व रात में भी दिन की प्रकार देख पाती हैं। ये शक्तियाँ उसे शिकार करने में सहायक होती हैं। शाकाहारी जीवों में सूँघने की शक्ति उतनी तीव्र नहीं होती

व रात में भी दिन की भाँति देखने की शक्ति नहीं होती।

११. मांसाहारी जीवों के शब्द कर्कश व भयंकर होते हैं। शाकाहारी जीवों के शब्द कर्कश नहीं होते।

१२. मांसाहारी जीवों के बच्चे जन्म के बाद एक सप्ताह तक प्रायः दृष्टि शून्य होते हैं। शाकाहारी जीवों के बच्चे प्रारम्भ से ही दृष्टि वाले होते हैं।

उपरोक्त तथ्यों से यह पता लगता हैं -कि ईश्वर ने मनुष्य की बनावट शाकाहारी पशुओं गाय, घोड़ा, ऊँट, जिराफ, सांड आदि शाकाहारी पशुओं के समान ही की है, उसे शाकाहारी पदार्थों को ही सुगमता व सरलता से प्राप्त कर सकने व पचाने की क्षमता दी है। मनुष्य के अलावा संसार का कोई भी जीव ईश्वर द्वारा प्रदान की हुई शरीर रचना व स्वभाव के विपरीत आचरण करना नहीं चाहता। शेर भूखा होने पर भी शाकाहारी पदार्थ नहीं खाता और गाय भूखी होने पर भी मांसाहार नहीं करती क्योंकि वह उनका स्वाभाविक व प्रकृति अनुकूल आहार नहीं है। मांसाहारी पशु अपनी पूरी उम्र मांसाहार कर व्यतीत करते हैं उनके लिये यही पूर्ण आहार है, किन्तु कोई भी मनुष्य केवल मांसाहार पर दो तीन सप्ताह से अधिक जीवित नहीं रह सकता क्योंकि केवल मांस का आहार इतने अधिक तेजाब व विष (Acid and Toxins) उत्पन्न कर देगा कि उसके शरीर की संचालन क्रिया ही बिगड़ जाएगी। जो मनुष्य प्रकृति के विपरीत मांसाहार करते हैं उन्हें भी कुछ न कुछ शाकाहारी पदार्थ लेने ही पड़ते हैं क्योंकि मनुष्य के लिए मांसाहार अपूर्ण व आयु क्षीण करने वाला आहार है। (Eskimos) एसकीमों जो परिस्थितिवश प्रायः मांसाहार पर ही रहते हैं, की औसत आयु सिर्फ ३६ वर्ष ही है। जबकि केवल शाकाहार पर मनुष्य पूरी व लम्बी उम्र सरलता से जी सकता है ।

जौन्स हौपकिन्स यूनिवर्सिटी के डॉ. एलन वाकर ने भी दाँतों के माइक्रोसकोपिक एनैलिसिस से यह पता लगाया है कि मनुष्य फल खाने वाले प्राणियों का वंशज है, न कि मांस खाने वालों का। {मनुष्य-मनुष्य का ही वंशज है- सं.}

कोई भी व्यक्ति फल, अनाज, सब्जी देख कर नफरत से नाक नहीं सिकोड़ता जबकि लटका हुआ मांस देख कर अधिकांश को घृणा होती है, क्या यह उसकी स्वाभाविक शाकाहारी प्रकृति का द्योतक नहीं है?

उपरोक्त सभी तथ्य यह प्रमाणित करते हैं कि प्रभु ने मनुष्य की रचना शाकाहारी और केवल शाकाहारी भोजन के अनुकूल ही की है ।

साभार- निरामिष

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास — भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री — डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब

एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

गणतन्त्र दिवस पर विशेष चिन्तन

आज क्रान्ति फिर लाना है

आज सभी आजाद हो गए, फिर ये कैसी आजादी
वक्त और अधिकार मिले, फिर ये कैसी बर्बादी
संविधान में दिए हकों से, परिचय हमें कराना है,
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

जहाँ शिवा, राणा, लक्ष्मी ने देश भक्ति का मार्ग बताया
जहाँ राम, मनु, हरिश्चन्द्र ने प्रजा भक्ति का सबक सिखाया
वहीं पुन: उनके पथगामी, बनकर हमें दिखाना है,
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

गली-गली दंगे होते हैं, देश प्रेम का नाम नहीं
नेता बन कुर्सी पर बैठे, पर जनहित का काम नहीं
अब फिर इनके कर्त्तव्यों की, स्मृति हमें दिलाना है,
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

सत्य-अहिंसा भूल गये हम, सिमट गया स्नेह अरु प्यार
बच गए थे जे. पी. के सपने, बिक गए वे भी सरे बजार
सुभाष, तिलक, आजाद, भगत के, कर्म हमें दोहराना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

आज जिन्हें अपना कहते हैं, वही पराए होते हैं
भूल वायदे ये जनता के, नींद चैन की सोते हैं
उनसे छीन प्रशासन अपना, 'युवाशक्ति' दिखलाना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

सदियों पहले की आदत, अब तक ना हटे हटाई है
निज के जनतंत्री शासन में, परतंत्री छाप समाई है
अपनी हिम्मत, अपने बल से, स्वयं लक्ष्य को पाना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

राष्ट्र एकता के विघटन में, जिस तरह विदेशी सक्रिय हैं
उतने ही देश के रखवाले, पता नहीं क्यों निष्क्रिय हैं
प्रेम-भाईचारे में बाधक, रोड़े सभी हटाना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

कहीं राष्ट्रभाषा के झगड़े, कहीं धर्म-द्वेष की आग
पनप रहा सर्वत्र आजकल, क्षेत्रीयता का अनुराग
हीन विचारों से ऊपर उठ, समता-सुमन खिलाना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

अब हमको संकल्पित होकर, प्रगति शिखर पर चढ़ना है
ऊँच-नीच के छोड़ दायरे, हर पल आगे बढ़ना है
सारी दुनिया में भारत की, नई पहचान बनाना है
भारत को खुशहाल बनाने, आज क्रान्ति फिर लाना है....

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।

☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।

☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।

☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।

☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।

☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

☞ वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।

☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।

(अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

(द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।

☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।

☞ पुरस्कार राशि क्रमश: ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

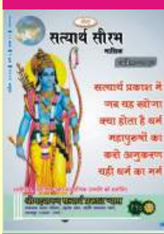

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

तक्षक

मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण से एक चौथाई सदी बीत चुकी थी। तोड़े गए मन्दिरों, मठों और चैत्यों के ध्वंसावशेष अब टीले का रूप ले चुके थे, और उनमें उपजे वन में विषैले जीवों का आवास था। यहाँ के वायुमण्डल में अब भी कासिम की सेना का अत्याचार पसरा था। जैसे बलत्कृता कुमारियों और सरकटे युवाओं का चीत्कार गूँजता था। कासिम ने अपने अभियान में युवा आयु वाले एक भी व्यक्ति को जीवित नही छोड़ा था, अस्तु अब इस क्षेत्र में हिन्दू प्रजा अत्यल्प ही थी।

संहार के भय से इस्लाम स्वीकार कर चुके कुछ निरीह परिवार यत्र तत्र दिखाई दे जाते थे, पर कहीं उल्लास का कोई चिह्न नहीं था। कुल मिलाकर यह एक श्मशान था। इस कथा का इस श्मशान से मात्र इतना सम्बन्ध है कि इसी श्मशान में जन्मा एक बालक जो कासिम के अभियान के समय मात्र आठ वर्ष का था, वह इस कथा का मुख्य पात्र है। उसका नाम था तक्षक।

मुल्तान विजय के बाद कासिम के सम्प्रदायोन्मत्त आतंकवादियों ने गाँवो शहरों में भीषण रक्तपात मचाया था। हजारों स्त्रियों की छातियाँ नोची गयीं, और हजारों अपने शील की रक्षा के लिए कुँए तालाब में डूब मरीं। लगभग सभी युवाओं को या तो मार डाला गया या गुलाम बना लिया गया। अरब ने पहली बार भारत को अपना 'धर्म' दिखाया था, और भारत ने पहली बार मानवता की हत्या देखी थी। तक्षक के पिता सिन्धु नरेश दाहिर के सैनिक थे जो इसी कासिम की सेना के साथ हुए युद्ध में वीरगति पा चुके थे।

लूटती अरब सेना जब तक्षक के गाँव में पहुँची तो हाहाकार मच गया। स्त्रियों को घरों से खींच खींच कर उनकी देह लूटी जाने लगी। भय से आक्रांत तक्षक के घर में भी सब चिल्ला उठे। तक्षक और उसकी दो बहनें भय से काँप उठी थीं। तक्षक की माँ पूरी परिस्थिति समझ चुकी थी, उसने कुछ देर तक अपने बच्चों को देखा और जैसे एक निर्णय पर पहुँच गयीं। माँ ने अपने तीनों बच्चों को खींच कर छाती में चिपका लिया और रो पड़ी। फिर देखते देखते उस क्षत्राणी ने म्यान से तलवार खींची और अपनी दोनों बेटियों का सर काट डाला। उसके बाद 'काटी जा रही गाय की तरह' बेटे की ओर अंतिम दृष्टि डाली, और तलवार को 'अपनी' छाती में उतार लिया।

आठ वर्ष का बालक 'एकाएक' समय को पढ़ना सीख गया था, उसने भूमि पर पड़ी मृत माँ के आँचल से अंतिम बार अपनी आँखे पोंछी और घर के पिछले द्वार से निकल कर खेतों से होकर जंगल में भागा.. पच्चीस वर्ष बीत गए। तब का अष्टवर्षीय तक्षक अब बत्तीस वर्ष का पुरुष हो कर कन्नौज के प्रतापी शासक नागभट्ट द्वितीय का मुख्य अंगरक्षक था। वर्षों से किसी ने उसके चेहरे पर भावना का कोई चिह्न नहीं देखा था। वह न कभी खुश होता था न कभी दुखी, उसकी आँखें सदैव अंगारे की तरह लाल रहती थीं। उसके पराक्रम के किस्से पूरी सेना में सुने सुनाये जाते थे। अपनी तलवार के एक वार से हाथी को मार डालने वाला तक्षक सैनिकों के लिए 'आदर्श' था।

कन्नौज नरेश नागभट्ट अपने अतुल्य पराक्रम, विशाल सैन्यशक्ति और अरबों के सफल प्रतिरोध के लिए ख्यात थे। सिन्ध पर शासन कर रहे अरब कई बार कन्नौज पर आक्रमण कर चुके थे, पर हर बार योद्धा राजपूत उन्हें खदेड़ देते। युद्ध के 'सनातन नियमों का पालन करते' नागभट्ट कभी उनका पीछा नहीं करते, जिसके कारण बार-बार वे मजबूत होकर पुनः आक्रमण करते थे। ऐसा पंद्रह वर्षों से हो रहा था।

आज महाराज की सभा लगी थी। कुछ ही समय पूर्व गुप्तचर

ने सूचना दी थी, कि अरब के खलीफा से सहयोग लेकर सिन्ध की विशाल सेना कन्नौज पर आक्रमण के लिए प्रस्थान कर चुकी है, और संभवतः दो से तीन दिन के अन्दर यह सेना कन्नौज की सीमा पर होगी। इसी सम्बन्ध में रणनीति बनाने के लिए महाराज नागभट्ट ने यह सभा बैठाई थी। नागभट्ट का सबसे बड़ा गुण यह था कि वे अपने सभी सेनानायकों का विचार लेकर ही कोई निर्णय करते थे। आज भी इस सभा में सभी सेनानायक अपना विचार रख रहे थे। अंत में तक्षक उठ खड़ा हुआ और बोला- महाराज, हमें इस बार वैरी को उसी की शैली में उत्तर देना होगा। महाराज ने ध्यान से देखा अपने इस अंगरक्षक की ओर, बोले- अपनी बात खुल कर कहो तक्षक, हम कुछ समझ नहीं पा रहे।

'महाराज, अरब सैनिक महाबर्बर हैं, उनके साथ सनातन नियमों के अनुरूप युद्ध करके हम अपनी प्रजा के साथ घात ही करेंगे। उनको 'उन्ही की शैली' में हराना होगा। महाराज के माथे पर लकीरें उभर आयीं, बोले- किन्तु हम धर्म और मर्यादा नही छोड़ सकते सैनिक।

तक्षक ने कहा- 'मर्यादा का निर्वाह' उसके साथ किया जाता है जो मर्यादा का अर्थ समझते हों।

ये बर्बर धर्मोन्मत्त राक्षस हैं महाराज। इनके लिए हत्या और बलात्कार ही धर्म है।

'पर यह हमारा धर्म नही है वीर'। 'राजा का केवल एक ही धर्म होता है महाराज, और वह है प्रजा की रक्षा। देवल और मुल्तान का युद्ध याद करें महाराज, जब कासिम की सेना ने दाहिर को पराजित करने के पश्चात् प्रजा पर कितना अत्याचार किया था। ईश्वर न करे, यदि हम पराजित हुए तो बर्बर अत्याचारी अरब हमारी स्त्रियों, बच्चों और निरीह प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह महाराज जानते हैं।'

महाराज ने एक बार पूरी सभा की ओर निहारा, सबका मौन तक्षक के तर्कों से सहमत दिख रहा था।

महाराज अपने मुख्य सेनापतियों, मंत्रियों और तक्षक के साथ गुप्त सभाकक्ष की ओर बढ़ गए। अगले दिवस की संध्या तक कन्नौज की पश्चिम सीमा पर दोनों सेनाओं का पड़ाव हो चुका था, और आशा थी कि अगला प्रभात एक भीषण युद्ध का साक्षी होगा। आधी रात्रि बीत चुकी थी। अरब सेना अपने शिविर में निश्चिन्त सो रही थी। अचानक तक्षक के संचालन में कन्नौज की एक चौथाई सेना अरब शिविर पर टूट पड़ी। अरबों को किसी हिन्दू शासक से 'रात्रि युद्ध' की आशा न थी। वे उठते, सावधान होते और हथियार सँभालते इसके पूर्व ही आधे अरब गाजर मूली की तरह काट डाले गए।

इस भयावह निशा में तक्षक का शौर्य अपनी पराकाष्ठा पर था। वह घोड़ा दौड़ाते जिधर निकल पड़ता उधर की भूमि शवों से पट जाती थी। उषा की प्रथम किरण से पूर्व अरबों की दो तिहाई सेना मारी जा चुकी थी। सुबह होते ही बची सेना पीछे भागी। किन्तु आश्चर्य! महाराज नागभट्ट अपनी शेष सेना के साथ उधर तैयार खड़े थे। दोपहर होते-होते समूची अरब सेना काट डाली गयी। अपनी बर्बरता के बल पर विश्वविजय का स्वप्न देखने वाले आतंकियों को 'पहली बार' किसी ने ऐसा उत्तर दिया था।

विजय के बाद महाराज ने अपने सभी सेनानायकों की ओर देखा, उनमें तक्षक का कहीं पता नहीं था। सैनिकों ने युद्धभूमि में तक्षक की खोज प्रारम्भ की तो देखा- लगभग हजार अरब सैनिकों के शव के बीच तक्षक की मृत देह दमक रही थी। उसे शीघ्र उठा कर महाराज के पास लाया गया। कुछ क्षण तक इस अद्भुत योद्धा की ओर चुपचाप देखने के पश्चात् महाराज नागभट्ट आगे बढ़े और तक्षक के चरणों में अपनी तलवार रख कर उसकी मृत देह को प्रणाम किया।

युद्ध के पश्चात् युद्धभूमि में पसरी नीरवता में भारत का वह महान् सम्राट 'गरज' उठा- 'आप आर्यावर्त्त की वीरता के शिखर थे तक्षक। भारत ने अब तक मातृभूमि की रक्षा में प्राण 'न्योछावर करना' सीखा था, आप ने मातृभूमि के लिए प्राण लेना सिखा दिया। भारत युगों-युगों तक आपका आभारी रहेगा।'

इतिहास साक्षी है, इस युद्ध के बाद अगली तीन शताब्दियों तक अरबों में भारत की तरफ आँख उठाकर देखने की हिम्मत नही हुई।

साभार- अन्तर्जाल

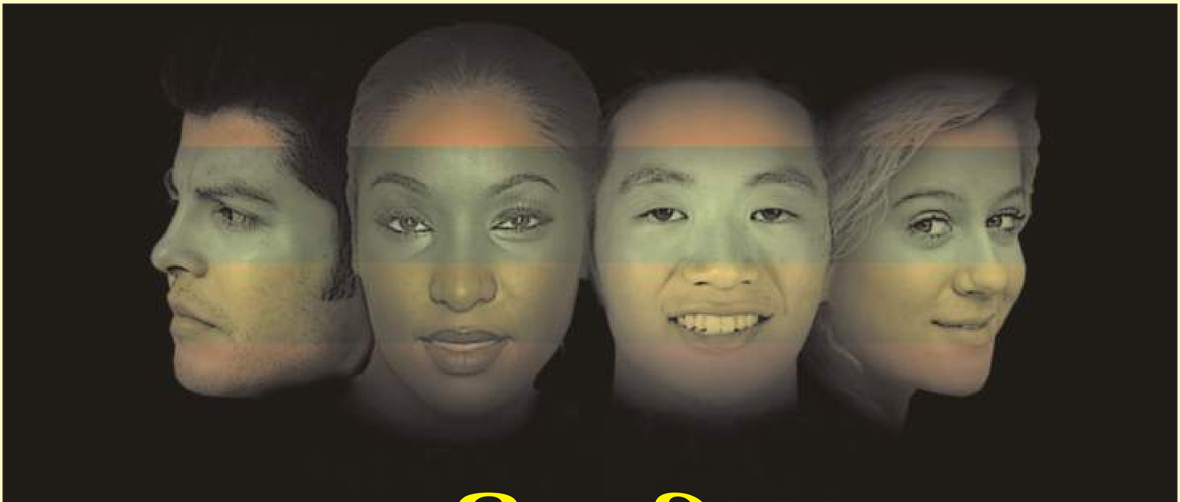

मानव जाति की समानता

सारी धरती के सभी मनुष्यों के शरीरों में विविध इन्द्रिययुक्त मुख, हाथ-कन्धों सहित धड़ और टाँगों की संरचना एक सी है। आँख आदि इन्द्रियों की कार्य प्रणाली भी सभी में समान रूप से मिलती है। भौगोलिक दृष्टि से रंग और रूप का ही थोड़ा सा भेद होता है। अतएव एक देश में रहने वाले तथाकथित हिन्दू, ईसाई, मुसलमान को उस-उस रूप में अलग पहचानना कठिन होता है। जब तक वे अपनी मान्यता के अनुसार बाह्य चिह्नों को धारण नहीं करते।

सभी मनुष्यों के शरीरों में आँख, कान आदि इन्द्रियाँ एक ढंग से एक सा कार्य करती हैं, सभी के शरीरों की आन्तरिक प्रणाली एक से रूप में कार्य करती है। पाचन की परिपाक व्यवस्था भी समान रूप से चलती है। सभी इन्सानों के शरीर एक ही ढंग से माता-पिता द्वारा उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। सभी के शरीर एक ही प्रकृति, मूलतत्व से बने हुए हैं। इसीलिए सभी के खून का रंग लाल ही होता है, सभी की हड्डियाँ सफेद और मांस एक जैसा ही होता है। इसीलिए तो कहा है-

'अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे।।

- कबीर, गुरुग्रन्थ

इक माटी के भाण्डे। - रविदास
रविदास उपजहि इक बूंद सो सभ हि इक समान।
इक ज्योति सो सभ उपजहि तउ ऊंच नींच कह मान।।
सभ में एको आत्मा दूसरा कोई नां हि।
सभन को इक जात।
मानस की जात सभै, एक ही पहचान बो।
एक ही स्वरूप सभै, एक ही बनाव है।' - गुरु गोविन्द सिंह

पृथिवी के सारे मनुष्यों के हृदयों या मस्तिष्कों में सुख, शान्ति और दूसरे से स्नेह, सहयोग, ईमानदारी का व्यवहार प्राप्त करने की इच्छा एक-सी ही होती है। कोई भी अपने साथ चोरी, गाली, बेईमानी आदि का दुर्व्यवहार होने पर खुश नहीं होता, सभी इससे दुःखी होते हैं। ईश्वर को मानने वालों की दृष्टि से सभी एक ही खुदा के बनाए हुए बन्दे हैं और सभी की अजर-अमर रूप से आत्मा एक-सी है।

अज्येष्टासो अकनिष्टास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना: मरुद्भ्यः।।

- ऋग्वेद ५/६०/५

सभी मनुष्यों में से मानवता की दृष्टि से न कोई बड़ा है न कोई छोटा अर्थात् सभी समान हैं। अतः सभी भाईयों की तरह सौभाग्य के लिए प्रयास करें।

इसीलिए विशेष परिवार, कुल, वर्ग, सम्प्रदाय, प्रान्त, देश में जन्म लेने या किसी से सम्बद्ध होने मात्र से किसी में कोई अन्तर या अच्छा-बुरापन नहीं आ जाता। केवल जन्म, सम्प्रदाय, रूप, रंग, धर्म, भाषा, देश, श्रम के आधार पर किसी में कोई अन्तर नहीं होता। अपितु जो अन्तर होता है, वह संस्कार, सदाचार से ही होता है। अतः इस आधार पर एक-दूसरे से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध, मनमुटाव और भेदभाव नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे निर्दोषों से अन्याय एवं उनका निन्दनीय विनाश होता है। ऐसा करना मानव जाति की एकता को न मानना और उसका अपमान करना है।

एक मानव से दूसरे मानव में शिक्षा, योग्यता, संस्कार, गुण, कर्म से ही कुछ भेद होता है। अतः किसी की उच्चता,

सम्मान की परख इनके आधार पर ही करनी चाहिए। इस आधार पर यदि परस्पर अन्तर हो, तो किसी को चुभने या बुरा मानने वाली बात नहीं होती। पर जब बिना उचित आधार के परस्पर भेदभाव किया जाता है, तो उससे घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, विरोध की भावना पनपती है। जो कि अशान्ति, असन्तोष और दुःख, क्लेश, कलह का कारण बनती है। जैसे कि जन्म के आधार पर किया गया अन्याय एकलव्य और विशेष रूप से कर्ण के साथ महाभारत का कारण बना। अतः जीवन को सरल, सुखी बनाने के लिए सामाजिक व्यवहार में सभी को समानता का अवसर मिलना चाहिए। जिससे सभी को प्रगति का अवसर प्राप्त हो सके। इससे सामाजिक समानता के कारण जहाँ समाज को सभी का सहयोग प्राप्त होगा, वहाँ समाज इससे अधिक सुखी हो सकेगा।

वस्तुतः मानव समाज की स्थिति हाथ की अंगुलियों की तरह है। जैसे हर व्यक्ति के अपने हाथ की पाँचों अंगुलियाँ भिन्न-भिन्न आकार, परिणाम की होती हैं। उनका स्थान और क्रम भी परस्पर भिन्न-भिन्न होता है, उनकी कार्य करने की शक्ति में भी स्पष्ट भेद प्राप्त होता है। इन पाँचों अंगुलियों में से कोई छोटी होती है तो कोई बड़ी, कोई मोटी है, तो कोई पतली। परन्तु जब कार्य करने का अवसर आता है, तो कार्य के अनुरूप वे पाँचों संगठित हो जाती हैं। लिखते समय उन का संगठन अलग ढंग से होता है, तो किसी चीज को उठाते हुए या पकड़ते समय उनका विन्यास भिन्न प्रकार का होता है। रक्षा के समय उनका सामञ्जस्य अपने ढंग से होता है। भिन्न-भिन्न आकार, प्रकार की होती हुई भी पाँचों अंगुलियाँ इकट्ठी होकर उस-उस कार्य में भाग लेती हैं। तब ये आपस के भेदभाव, रूप आदि को भूलकर संगठित हो जाती हैं। मानव समाज के सामाजिक कार्यों में भी सभी वर्गों की यही स्थिति होनी चाहिए।

समान सामाजिक भावना के विपरीत जब कोई संकीर्ण दृष्टिकोण रखता है, तब वह किसी विशेष वर्ग को अपनाता और अधिक अच्छा मानता है। इससे परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और विरोध का व्यर्थ विवाद या दूरी ही बढ़ती है। अन्यथा सभी के प्रति समान सामाजिक भावना रखने से सभी के साथ अपनेपन और समानता की भावना उभरती है। महर्षि दयानन्द के इस विषय में ये विचार बहुत स्पष्ट ही हैं। तभी तो लिखा है-

'एक मनुष्य जाति में (को), बहका कर, विरुद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना लड़ा मारना, विद्वानों के स्वभाव से बहिः है।' - भूमिका पृ. ७

'जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि, सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।' - भूमिका पृ. ४

'चारों वर्ण परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दुःख, हानि, लाभ में ऐकमत्य रह कर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन का व्यय करते रहना।' - समु. ४, पृ. ११२

'जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा।' - अनुभूमिका- १, पृ. २७१

शची पौलोमी

शची पौलोमी ऋग्वेद की ऋषिका है। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १५९ में इनकी छः ऋचाएँ हैं। वास्तव में ये ऋचाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनमें एक रानी अपने पति के राष्ट्राध्यक्ष निर्वाचित हो जाने पर प्रसन्नता से भर जाती है। वह इस प्रसन्नता को इस प्रकार व्यक्त करती है-

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः।। - ऋ. १०/१५९/१

पदार्थः- (असौ) यह (सूर्यः) सूर्य (उदगातूः) उदय को प्राप्त हो रहा है (अयम्) यह (मामकः) मेरे सम्बन्धी (भगः) ऐश्वर्य वा सौभाग्य भी (उदगात्) उदय को प्राप्त हो रहा है। (अहम्) मैं (तत् पतिम्) अपना पति (विद्वला) पा गई हूँ। मैं (विषा सहिः) शत्रुओं को पराजित करने वाली होकर (अभि असाक्षि) उनको पराजित करूँ।

भावार्थः- पाठक ध्यान रखें कि यह कोई एतिहासिक घटना नहीं है। यह तो एक महिला के हृदय की प्रसन्नता का वर्णन है। यह प्रसन्नता उसे तब होती है जब उसके यौवनकाल की एक भावना मूर्तरूप ले लेती है। यदि कोई युवती यह सोचकर किसी युवक से विवाह करती है कि यह एक दिन किसी बड़े पद पर पहुँचेगा और जब वह दिन आ जाता है तो उसके मन में कैसे विचार की शृंखला चल पड़ती है इसका सजीव चित्रण यहाँ हुआ है। उसके मन में विचार आ रहे हैं- उनका वर्णन इस ऋचा में हुआ है।

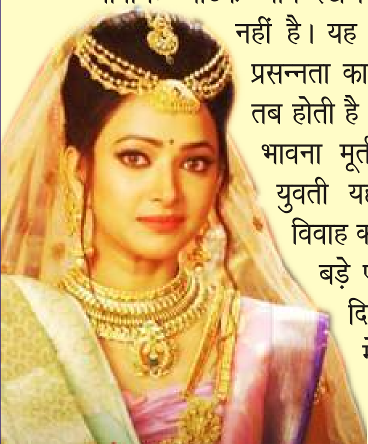

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहनाया उपाचरेत्।। - ऋ. १/१५९/२

(अहम्) मैं रानी (केतु) सबकी ज्ञात्री हूँ। (अहम्) मैं (मूर्धा) सबकी शिर स्थानीय हूँ। (अहम्) मैं (उग्रा) उग्र और (विवाचनी) विशेष रूप से वाचयित्री हूँ। (सेहनायाः) सपत्नी की अभिभावित्री (मम) मुझ पत्नी की (क्रतुम्) बुद्धि अथवा व्यवहार को (इत्) ही (अनु) लक्ष्य में रखकर (पतिः) पति (उपाचरेत्) मुझे प्राप्त होवे।

भावार्थः- मैं राज्ञी सबकी ज्ञात्री हूँ। मैं सबकी मूर्धा के समान हूँ। मैं उग्र और विशेष वक्त्री हूँ। सपत्नी का मर्दन करने वाली मुझ पत्नी की मति और कृति के अनुरूप ही पति मुझसे व्यवहार करे।

फिर उसको अपनी सन्तान पर भी गर्व है और गर्व से कहती है

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।। - ऋ. १०/१५९/३

पदार्थः- (मम) मेरे (पुत्रः) पुत्र लोग (शत्रुहणः) शत्रु का नाश करने वाले हैं (मे) मेरी (दुहिता) पुत्री (विराट्) विशेष राजमाना है। (उत) और (अहम्) मैं (संजया) भली प्रकार विजय पाने वाली (अस्मि) हूँ (पत्यौ) पति में (मे) मेरा (श्लोक) यश (उत्तमः) उत्तम है।

भावार्थः- रानी प्रसन्न होकर सोच रही है कि मैं अति सौभाग्यशालिनी हूँ। मेरे पुत्र शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं और मेरी पुत्री का सम्पूर्ण राज्य में विशेष आदर है। मैं स्वयं भी तो सदा विजय करने वाली हूँ और मेरे पति के हृदय में मेरा यश उत्तम है।

अगली ऋचा में इसी रानी के हृदय की भावना को विस्तार मिलता है।

येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तमः।
इदं तदक्रि देवा असपत्ना किलाभुवम्।। - ऋ. १०/१५९/४

पदार्थः- (येन) जिस (हविषा) भोजन के द्वारा (इन्द्रः) राजा (कृत्वो) कर्मों का कुशल कर्त्ता (अभवत्) होता है तथा (उत्तमः) उत्तम (द्युम्नौ) यशस्वी होता है। हे (देवाः) विद्वानों! (इदम्) यह (तत्) वह (आक्रि) मेरे द्वारा ही किया जाता है (असपत्ना) मैं शत्रु रहिता (किल) निश्चय (अभुवम्) होऊँ।

भावार्थः- जिस भोजन के द्वारा राजा कार्यों का कुशल कर्त्ता, उत्तम यशस्वी बना है वह मेरे द्वारा ही बनाया गया है।

असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी।
आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव।। - ऋ. १०/१५६/५

पदार्थः- (असपत्ना) शत्रुरहिता (सपत्नघ्नी) शत्रुनाशिनी (जयन्ती) जीतने वाली (अभिभूवरी) अभिभवित्री मैं (अस्थेयसामिव) अस्थिर तर शत्रुओं के समान (अन्यासाम्) विरोधियों के लिए (वर्चः) तेज और (राधः) धन को (अवृक्षम्) चाहती हूँ।

भावार्थः- शत्रुरहित, शत्रुनाशिनी, जयवाली और अभिभवित्री मैं अस्थितर शत्रुओं की भाँति विरोधियों के तेज और धन को काटती हूँ।

समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी।
यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च।। - ऋ. १/१५६/६

पदार्थः- (अभिभूवरी) अभिभवित्री (अहम्) मैं रानी (इमाः) इन (सपत्नीः) सौतों को (समजैषम्) जीतूं (यथा) जिससे (अहम्) मैं (अस्य) इस (वीरस्य) वीर राजा की (विराजनि) विशेष राजमाना होऊँ।

भावार्थः- अभिभवित्री मैं रानी इन सौतों पर विजय प्राप्त करूँ जिससे इस राजा की विशेष राजमाना पत्नी बनूँ।

यह समस्त वर्णन मनोविज्ञान से भरा हुआ है इससे विदित होता है कि शची पौलोमी मनोविज्ञान की अद्वितीय ज्ञाता रही होगी। इतिशम्।

- शिवनारायण उपाध्याय
७३ शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

स्वामी जी की रचना सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली को देखकर बहुत अच्छा लगा। ऋषि की जीवनी के चित्रों को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे मानो उनमें जीवन है। स्वामी जी के चित्रात्मक वर्णन ने मेरे जीवन में स्वामी जी को मेरा आराध्य गुरु बना दिया। यहाँ के कार्यरत सेवाभावी कर्मचारियों का व्यवहार बहुत अच्छा एवं मधुर है। - विजय गोयल, डांगरी, जैसलमेर (राज.)

स्वामी दयानन्द जी का चरित्र चित्रण एवं वेदों उपवेदों का दिग्दर्शन बहुत ही सुन्दर रूप से किया गया है। यह चित्रदीर्घा हमें आध्यात्मिक दृष्टि से देखने पर अपनी संस्कृति एवं प्राचीन सभ्यता का दिग्दर्शन कराती है। बहुत ही शिक्षाप्रद है यह गैलेरी। - अशोक कुमार, हिण्डौनसिटी(राज.)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ना १	१	■	२	२	न्त २	■	३	न ३
४	षु ४	४	■	५	५	र्म ५	■	६ वै	६
७	म्प ७	७	■	■	८ पु		८ षा	८	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. परमेश्वर कैसा है?
२. परमेश्वर की सामर्थ्य कैसी है?
३. इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के धर्मपथ पर कौन चलाता है?
४. सोते हुए मन किसे प्राप्त होता है?
५. मन किसे सर्वथा छोड़ दे?
६. उपासना के लिए आवश्यक है कि किसी से ...... न रखे?
७. उपासक को क्या नहीं होना चाहिए?
८. मनुष्य आलस्य को त्याग सदैव क्या करे?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१७ का सही उत्तर

१. सहस्र पैसा २. आठ ३. झूठे ४. व्यभिचार
५. करे ६. विद्या ७. परमेश्वर

"विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०१८

विषम परिस्थितियाँ क्षमता के विकास में सहायक

जब कपड़े धोने के लिए उन्हें वॉशिंग मशीन में डाला जाता है तो सबसे पहले उन्हें पानी में डुबोया जाता है। फिर उसमें रासायनिक पदार्थों से निर्मित डिटर्जेंट पाउडर या लिक्विड डाला जाता है। उसके बाद वॉशिंग मशीन कपड़ों की रगड़ाई करती है। कभी उन्हें दाएँ फेंकती है तो कभी बाएँ फेंकती है। जब तक मशीन चलती रहती है कपड़े जैसे एक भंवर में फंसकर नाचते रहने के लिए विवश हो जाते हैं। उसके बाद डिटर्जेंट वाला पानी निकालकर उन्हें साफ पानी में भी कई बार खंगाला जाता है और अंत में निचोड़ने का कार्य संपन्न किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया के बाद ही कपड़े दाग-धब्बों, चिकनाई व मैल से रहित व साफ-सुथरे होकर बाहर आते हैं।

हमारे जीवन में विषम परिस्थितियाँ भी एक वॉशिंग मशीन की तरह ही कार्य करती हैं। हम इन विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए हर तरह से एक बेहतर इंसान के रूप में बाहर निकलते हैं। जैसे धातु के बर्तनों पर राख अथवा मिट्टी रगड़ने से वे चमकने लगते हैं उसी तरह से संघर्षों में पला व उनसे जूझता हुआ व्यक्ति भी चमकने लगता है। उसके मुखमंडल पर एक तेज व्याप्त हो जाता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ जाता है जिससे वो पहले जिन परिस्थितियों का सामना करने से डरता था अब उनका मुकाबला करने में उसे डर नहीं लगता। जो काम उसे पर्वत के समान विशाल लगते थे अब राई के समान साधारण लगने लगते हैं। यही परिस्थितियाँ तो व्यक्ति के लिए उन्नति का मार्ग खोलती हैं।

"विषम परिस्थितियाँ ही हमारी प्रसुप्त शक्तियों को जागृत करने व हमारी क्षमता का विकास करने में सहायक होती हैं"

जिस प्रकार से सोना अग्नि में तपने पर शुद्ध हो जाता है, उसमें मिली हुई अशुद्धियाँ जलकर अलग या नष्ट हो जाती हैं उसी प्रकार से विषम परिस्थितियों में अथवा उनसे उत्पन्न संघर्ष के दौरान व्यक्ति अपनी कमियों व दोषों से मुक्त हो जाता है। उसे पता चल जाता है कि वो अपनी किन कमियों अथवा दोषों के कारण पिछड़ गया था। वह उन्हें समझकर दूर करने का प्रयास करता है। विषम परिस्थितियों से बाहर निकलने का एकमात्र यही उपचार होता है और विषम परिस्थितियों के कारण ही वो उन्हें दूर कर पाता है। ये विषम परिस्थितियाँ ही होती हैं जो मनुष्य में धैर्य का विकास करती हैं, उसे सहनशील बनाती हैं। विषम परिस्थितियों में ही व्यक्ति दूसरों से सहयोग व मार्गदर्शन लेने की योग्यता भी विकसित कर पाता है। विषम परिस्थितियाँ जीवन को नए आयाम प्रदान करने में सक्षम होती हैं। विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होने के कारण ही हमारी प्रसुप्त शक्तियाँ जागृत हो उठती हैं। हमें सामान्यतः ये पता ही नहीं होता कि हममें कितनी शक्ति है अथवा हम क्या-क्या कार्य कर सकते हैं? विषम परिस्थितियाँ ही हमें हमारी शक्ति अथवा क्षमता से अवगत कराने में सक्षम होती हैं। ये विषम परिस्थितियाँ ही हैं जो हमारे सामने असीम संभावनाओं के द्वार खोल देती हैं। ऐसे में ही हम नए रास्तों की तलाश में जी-जान से जुट जाते हैं। सामान्य परिस्थितियों में हम कब नए रास्ते तलाशने का जोखिम उठाते हैं? जीवन में जितनी अधिक विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं हम उतना ही अधिक संघर्ष करते हैं और उतना ही अधिक आगे बढ़ते हैं।

- आशा गुप्ता
ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४
फोन नं. ०९३१०१७२३२३

मनमोहन कुमार आर्य

प्रतिशोध

भारत माता के वीरसपूत अमर व अजेय वीर सावरकर का नाम लेकर भारतीय आर्य हिन्दू गौरव का अनुभव करते हैं। देश की आजादी के लिए उन्होंने जो कार्य व बलिदान किया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित है। सावरकर जी स्वतन्त्रता के अग्रणीय योद्धा व समाज सुधारक सहित एक सफल लेखक व इतिहासकार भी थे। उन्होंने सन् १८५७ की प्रथम आजादी की लड़ाई वा क्रान्ति पर जो ग्रन्थ 'प्रथम स्वातन्त्र्य का इतिहास' लिखा है, वह उन्हें एक सफल इतिहासज्ञ सिद्ध करता है। प्रत्येक भारतीय को उनका वह ग्रन्थ तो अवश्य ही पढ़ना चाहिये। पाठक इसे पढ़कर तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत होने के साथ अनेक ऐतिहासिक तथ्यों से भी परिचित हो सकते हैं। ऐसा इतिहास अन्यत्र दुर्लभ है। यह भी बता दें कि प्रकाशन से पूर्व ही इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इतिहास में शायद ही ऐसी कोई घटना होगी कि पुस्तक का प्रकाशन हुआ ही नहीं और वह प्रतिबन्धित कर दी गई। यह भी बता दें कि सावरकर जी को आजादी की लड़ाई में भूमिका के लिए दो जन्मों का कारावास दिया गया

था। वह कालापानी अर्थात् केन्द्रीय सेलुलर जेल, पोर्टब्लेयर में रहे और वहाँ उन्हें एक मानव कोल्हू में पशु की भाँति जोतकर तेल निकलवाया जाता था। हमने पोर्टब्लेयर जाकर इन सभी दृश्यों का साक्षात्कार किया है। उस कमरे में भी गये जहाँ वह वर्षों तक रहे। हम उनके बलिदान व देशभक्ति को नमन करते हैं। सावरकर जी ने एक नाटक लिखा है जिसका नाम है 'प्रतिशोध'। पानीपत की प्रथम लड़ाई में मराठों की पराजय के प्रतिशोध की कथा इस नाटक की पृष्ठभूमि है। इसमें अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को भी प्रस्तुत किया गया है जिससे आज की युवापीढ़ी व विद्वान् अपरिचित हैं।

पानीपत की युद्धभूमि में मराठों की विजय के अवसर से पूर्व का एक ऐसा ही प्रकरण हम प्रतिशोध ग्रन्थ से प्रस्तुत कर रहे हैं। पुस्तक का प्राक्कथन श्री विक्रमसिंह, एम.ए. ने लिखा है। पूरा प्राक्कथन पढ़ने योग्य है परन्तु हम उनके कुछ महत्वपूर्ण शब्द यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। वे लिखते हैं- 'प्रतिशोध' का मूल कथानक मरहटों की उत्तरविजय पर आधारित है, परन्तु उसके साथ ही विदेश से वापस आये वीरवर यशवन्तराव के माध्यम से लेखक ने सिन्धुबन्दी एवं रोटीबन्दी जैसी भ्रामक कल्पनाओं को निर्मूल सिद्ध किया है, साथ ही सादुल्लाखान द्वारा बलपूर्वक अपहृत प्रथम पत्नी सुनीति का सम्मान स्वीकार करने का आदर्श प्रस्तुत कर, शुद्धि आन्दोलन का महत्व भी प्रतिपादित किया है। वैसे ही कोंडण्णा और घोंडण्णा (फलित ज्योतिषियों) के रूप में समाज में होने वाले स्वार्थी, भीरु तथा नीच तत्वों को चित्रित कर, उनके पापों का कठोर प्रायश्चित्त भी दर्शाया है।'

अंग्रेज वकील मराठा सरदार यशवंतराव जी को कहते हैं 'हाः हाः हाः। यशवंटराव! वह मरहटों की तलवार मुसलमानों को बटाव (बताओ)। उनसे वे डरेंगे। पर हम ब्रिटिश-हम उससे

डरता नाय, टुम हिन्डु-टुमारे आपस में फूट। टुम सब के गुलाम मुस्लिमों के भी स्लेव? पर ब्रिटेन कभी भी किसी का स्लेव हुआ नाय-आज भी नाय।'

इसका उत्तर मराठा सरदार यशवंतराव जी ने जो दिया उसमें अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन हुआ है। वह मुसलमान बादशाह के सामने अंग्रेज वकील को कहते हैं- ब्रिटेन आज किसी का गुलाम नहीं है तो महाराष्ट्र भी तो किसी का गुलाम नहीं है। पर ब्रिटेन कभी भी किसी का गुलाम हुआ नहीं, यह घमण्ड कम से कम मेरे सम्मुख तो ना करो। रोमन लोगों ने ब्रिटेन को अपना गुलाम बनाया था कि नहीं? वह रोमन सेना, जब ब्रिटेन छोड़कर जाने लगी, तब स्कौच लोगों के डर के कारण 'ना जाओ, हमें छोड़कर ना जाओ, नहीं तो (We shall find ourselves between the devil and deep see.) कहकर रोमन लोगों के पाँव किस डरपोक गुलाम ने पकड़े थे? ब्रिटेन ने ही ना। सेक्सन्स ने किसे जीता? ब्रिटेन को। डचों ने किसे गुलाम बनाया। ब्रिटेन को। नार्मनों ने किस पर चढ़ाई की? ब्रिटेन पर। नार्मन लोग जिसे बुरी से बुरी गाली देना चाहते थे, उसे 'यग्लिशमन' अर्थात् गुलाम कहते थे- वे दिन अंग्रेज लोगों को भी भूलना नहीं चाहिए। साहब मैं आपका देश देख आया हूँ। (यशवंतराव जी इंग्लैण्ड सहित अनेक यूरोप के देशों का भ्रमण कर आये थे। ब्राह्मणों ने समुद्र पार जाने और वहाँ के लोगों के हाथ का भोजन करने के कारण उन्हें हिन्दू धर्म से पतित करने का षड्यन्त्र किया परन्तु वह सफल नहीं हुए।) यशवन्तराव सच्चे देश भक्त थे। (वीर सावरकर जी ने पण्डितों को उनसे जो संवाद कहलवाये हैं वह तर्क व युक्तियाँ वही हैं जो ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज की होती हैं। - लेखक)।

यशवन्तराव जी अंग्रेज वकील को आगे कहते हैं कि आप के घर की स्थिति मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। आज हमारे विशाल हिन्दुस्तान के हिन्दू लोग जातीयता, प्रान्तीयता के कारण असंगठित हुए हैं, पर तुम्हारे उस जरा से इंग्लैंड के भी टुकड़े जिन सात राज्यों में हुए थे, उस Heptarchy- का स्मरण करो। और यह भी ध्यान में रखो कि, ऐसी असंगठित हुई हिन्दुस्तान की यह दुर्बलता भी कम से कम आज तो राज्यशक्ति में तुम से सबल है। जिसे इतनी खाज हो वह हिन्दुपति मरहटे के रास्ते में आ के देखे।

इसके उत्तर में अंग्रेज वकील ने कहा कि वेल यशवंटराव, मरहटों की बाजू हिन्दुस्तान में आज यडि समर्ठ (समर्थ) होगा भी टो भी कल वह वैसा ही रहेगा क्या? इस पर यशवंतराव जी ने कहा कि रहेगा भी और नहीं भी रहेगा। प्रत्येक उदय का अन्त अस्त में होता है, प्रत्येक अस्त का अन्त उदय में होता है।

Heptarchy- को जिसने देखा, वह इंग्लैड जैसे एक राष्ट्र हुआ, वैसे आज की रोटीबन्दी (मुसलमान, ईसाई व अन्यों के हाथ का भोजन न करना इससे उनका हिन्दुओं का धर्म चला जाता है) से, समुद्रबन्दी से (समुद्र पार जाने से भी हिन्दुओं का धर्म चला जाता है, इस अनुचित सिद्धान्त से) जातिबन्दी (जन्मना जातिवाद से हिन्दुओं में परस्पर जो फूट है, उससे) जकड़ा हुआ यह हिन्दू-राष्ट्र उन बेड़ियों को तोड़ कर कल एक अत्यन्त प्रबल ऐसा राष्ट्र हो भी सकता है। आज अटक तक चढ़ जाकर जैसे उसने मुसलमानों के आक्रमण से महाराष्ट्र की रक्षा की, वैसे ही समुद्रबन्दी की, रोटी-बन्दी की, बेड़ियाँ तोड़ कर लन्दन में जाकर कल वे हिन्दुस्तान भी बचा सकेंगे। साहब, इंग्लैंड से आप हिन्दुस्तान में आते हैं, यह यदि सम्भव है तो बम्बई से हमारा इंग्लैंड जाना भला असम्भव कैसे होगा?

उपर्युक्त पंक्तियों में अंग्रेजों के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है जिसे वह छुपाने का प्रयास करते हैं और हम व हमारे लोग उन्हें जानते नहीं हैं। हिन्दू समाज की कमियों को विधर्मी खूब रेखांकित करते हैं परन्तु वह अपनी कमजोरियाँ व बुराईयाँ नहीं देखते हैं। हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द जी की वैदिक मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में अपना सुधार करना चाहिये और अन्य मतों को भी वेदानुकूल सत्य ईश्वरीय सिद्धान्तों को स्वीकार करना चाहिये।

- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०४१२९८५१२१

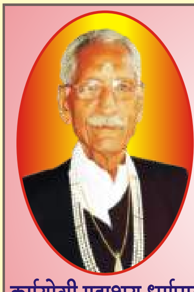
कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

परहित सबसे बड़ा धर्म है,
परहित है सुख का आधार।
परहित से जग अपना हो जाता,
होते सारे स्वप्न साकार॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

समाचार

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल, टीकरी, जानी, मेरठ में मकर सौरसंक्रान्ति के पावन अवसर पर १३ व १४ जनवरी २०१८ को वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। जहाँ १३ जनवरी २०१८ को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द सरस्वतीजी की ४६वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय है- ''उपनिषदों में विविध विद्याएँ।'' १० जनवरी २०१८ को प्रारम्भ किये गये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार १४ जनवरी को होगा।

- कुलाधिपति, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द आवासीय योजना पर किया आभार व्यक्त

कोटा के नगर विकास न्यास द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर आवासीय योजना लाने पर आर्यसमाज की ओर से न्यास चैयरमेन और अधिकारियों का आभार व्यक्त किया गया। आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, डी.ए.वी की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, प्रेमनाथ कौशल, अमर लाल गहलोत, रामनारायण कुशवाह, रामदेव शर्मा, आर्यपुरोहित श्योराज वशिष्ठ, लालचन्द आर्य के प्रतिनिधि मण्डल ने न्यास चैयरमेन राम कुमार मेहता तथा सचिव आनन्दी लाल वैष्णव का अभिनन्दन कर धन्यवाद व्यक्त किया।

प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि पिछले दिनों न्यास अध्यक्ष से मिलकर आवासीय योजना का नामकरण स्वामी दयान्द सरस्वती के नाम से करने का आग्रह किया गया था। जिसे न्यास प्रशासन ने स्वीकार करते हुए आवासीय योजना का शुभारंभ भी कर दिया है। उन्होंने बताया कि न्यास द्वारा इससे पूर्व भी शहर में जवाहरनगर की मुख्य सड़क का नामकरण स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर किया जा चुका है।

- अर्जुनदेव चड्ढा, प्रधान

आर्य समाज में चित्रकला प्रतियोगिता

निम्बाहेड़ा के शान्ति नगर स्थित आर्य समाज में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें कक्षा १ से कॉलेज विद्यार्थियों तक के विद्यार्थियों ने भागीदारी की। पाँच अलग-अलग वर्गों में आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, जल बचाओ, स्वच्छ भारत, जंगल बचाओ, डिजिटल इण्डिया विषयों सहित १८५७ के क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत व आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा तात्याटोपे, लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डे व नानासाहेब से सम्बन्धित बहुत सुन्दर चित्र बनाये।

'फाईन आर्ट' के वरिष्ठ विशेषज्ञ विपेन्द्र चतुर्वेदी, सुरेश कुमार रणजीत व आचार्य कर्मवीर मेधार्थी की देखरेख में आयोजित प्रतियोगिता में एडवोकेट रतन लाल राजोरा, मोहन लाल आर्यपुष्प, अरविन्द कुमावत, मनोज अग्रवाल, विजय कुमार बैरवा ने सहयोग किया। यह जानकारी आर्य समाज के मंत्री राधेश्याम धाकड़ व प्रतियोगिता संयोजक ब्रह्मानन्द आर्य ने दी।

आर्य समाज की कार्यकारिणी गठित

निम्बाहेड़ा में शान्ति नगर स्थित आर्य समाज भवन में बुधवार को आचार्य कर्मवीर मेधार्थी के सान्निध्य में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से आर्य समाज निम्बाहेड़ा की नवीन कार्यकारिणी गठित की गई। विक्रम आंजना-प्रधान, रविन्द्र साहू-उपप्रधान, राधेश्याम धाकड़-मन्त्री, एडवोकेट रतन लाल राजोरा-उपमन्त्री नियुक्त किये गये।

शिखा शारदा को महिला आर्य समाज की प्रधाना, परिधि भराडिया को मंत्री, ललिता साहू को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। सभी को बधाई।

ज्योतिष कार्यशाला सम्पन्न

पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के तत्वावधान में ७ से १२ नवम्बर २०१७ तक ज्योतिष वेदांग विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर हुई संगोष्ठी के सम्भागियों में प्रो. ओमप्रकाश पाण्डे, नई दिल्ली, डॉ. सत्यपाल सिंह मानव संसाधन मंत्री, भारत सरकार तथा साध्वी उत्तमायति के नाम उल्लेखनीय हैं।

- आचार्या नन्दिता शास्त्री

दीक्षेन्द्र आर्य 'राष्ट्र रत्न' अलंकरण से सम्मानित

प्रिय दीक्षेन्द्र आर्य एक ऐसे आर्य हैं जो न केवल महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति सर्वात्मना समर्पित हैं वरन् प्रचार की आधुनिकतम तकनीक में भी पारंगत हैं। और आर्य-मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में तकनीक का भरपूर प्रयोग कर रहे हैं। अभी आपको 'राष्ट्र रत्न' अलंकरण से पुरस्कृत किया गया है। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से अनेकशः बधाई व शुभकामनाएँ।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

आचार्य सत्यजित् बने प्रबन्धक न्यासी

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ के प्रबन्धक न्यासी आचार्य ज्ञानेश्वर जी के निधन के पश्चात् आश्रम के न्यासियों ने सर्वसम्मति से आर्य जगत् के प्रसिद्ध साधक विद्वान् आचार्य सत्यजित् जी को वानप्रस्थ साधक आश्रम का प्रबन्धक न्यासी नियुक्त किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी के छोड़े गए कार्यों को आचार्य सत्यजित् जी के निर्देशन में और भी विस्तृत आयाम प्राप्त होंगे।

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आचार्य सत्यजित् जी को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, पटियाला के तत्वावधान में ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार सप्ताह ६ से १२ नवम्बर २०१७ तक धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के अतिरिक्त भजनोपदेशक पंडित सतीश सुमन और पंडित बृजपाल आर्य के उद्बोधन अत्यन्त सारगर्भित और प्रेरक थे।

- वेद प्रकाश तुली

राष्ट्रीय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के निर्देशन में वीरांगनाओं का राष्ट्रीय सम्मेलन २३ दिसम्बर से २४ दिसम्बर २०१७ में आर्य समाज बी. ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली में अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। आयोजन को सफल बनाने हेतु सभी का आभार।

- मृदुला चौहान, संचालिका

हलचल

कनाडा निवासी श्री हरि वार्ष्णेय अपनी सहधर्मिणी श्रीमती मधु वार्ष्णेय,

भाई डॉ. अशोक वार्ष्णेय तथा डॉ. सत्य वार्ष्णेय के साथ संक्षिप्त प्रवास पर २० दिसम्बर २०१७ को उदयपुर पधारे।

इस अवसर पर न्यास स्थित माता लीलावन्ती सभागार में आयोजित 'न्यास सहयोगी स्नेह मिलन' में आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए मधु जी ने विद्वतापूर्ण उद्बोधन प्रदान करते हुए मनुष्य जीवन को सफल बनाने हेतु स्वर्णिम सूत्र प्रदान किए। इस अवसर पर डॉ. अशोक वार्ष्णेय, श्री हरि वार्ष्णेय ने भी उद्बोधन प्रदान किए।

मेलबर्न के RMIT विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने विशेष प्रकार की नैनो तकनीक से एक कपड़ा बनाया है जो कि रोशनी में अपने आप साफ हो जाता है। हमारे लिए गर्व की बात यह है कि शोधकर्त्ताओं के इस दल में एक भारतीय वैज्ञानिक भी शामिल है। शोधकर्त्ता राजेश रामनाथन ने बताया कि हालांकि वह दिन अभी दूर है जब आपको कपड़े धोने के लिए अपनी वॉशिंग मशीन का इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा, लेकिन इस शोध से भविष्य में खुद साफ होने वाले कपड़ों के विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार हो चुका है।

शोधकर्त्ताओं ने यह कपड़ा चांदी और तांबा आधारित नैनो संरचनाओं से विकसित किया है जो कि प्रकाश को सोखने की क्षमता रखता है। जब इन नैनो संरचनाओं पर प्रकाश पड़ता है तो इनमें ऊर्जा के संचार से गर्म इलेक्ट्रॉन निकलते हैं। ये गर्म इलेक्ट्रॉन बहुत सारी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, जिससे ये कपड़ा कार्बनिक पदार्थों, धूल-मिट्टी आदि को साफ कर देता है।

अब शोधकर्त्ताओं के लिए इस कपड़े को प्रयोगशाला से बाहर निकालकर वाणिज्यिक उत्पादन के लायक बनाने की सबसे बड़ी चुनौती है। रामनाथन के अनुसार कपड़ा कार्बनिक पदार्थ को साफ कर देता है, पर अब हमारे सामने इसे जैविक पदार्थों को भी साफ करने योग्य बनाने की चुनौती है। तब जाकर इसे आम जनता इस्तेमाल कर पाएगी।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

स्थानीय हिरणमगरी क्षेत्र में सेक्टर 11 स्थित निज निवास पर श्री प्रकाश चन्द्र श्रीमाली के द्वारा पंचदिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध कन्या गुरुकुल नजीबाबाद बिजनौर की प्राचार्या डॉ. प्रियम्वदा जी यज्ञ की ब्रह्मा थीं। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त शास्त्री के सारगर्भित प्रवचन का लाभ भी संभागियों ने उठाया।

प्रतिस्वर

आदरणीय अशोक जी आर्य, सादर नमस्ते

आपकी देखरेख में आयोजित २० वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में आने का अवसर मिला और मंचस्थ प्रभावशाली गणमान्य आर्यजनों के उद्बोधन से कुछ प्रकाश ग्रहण करने में सफल रहा।

आप मान्यवरों का प्रयास अत्यन्त सफल रहा। आप द्वारा मेहमानों की हृदय से की गई आवभगत मन के कोने में अंकित हो गई है। खाने और रहने की व्यवस्था एकदम व्यवस्थित रही। बुक स्टॉलों पर कुछ नया साहित्य भी प्राप्त हुआ।

आप द्वारा किया गया पुरुषार्थ और आप सभी का प्रेम व्यवहार हमेशा याद रहेगा।

– रमेश चन्द्र भाट, मंत्री, आर्य समाज रावतभाटा, कोटा

आर्य समाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई का वार्षिकोत्सव २६ से २८ जनवरी २०१८ में सोत्साह मनाया जा रहा है। समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा तथा मुख्य वक्ता आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय होंगे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

स्थानीय हिरणमगरी क्षेत्र में वैशाली अपार्टमेन्ट स्थित पार्क में श्री इन्द्रप्रकाश यादव के द्वारा त्रिदिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. देवशर्मा वेदालंकार यज्ञ के ब्रह्मा थे। डॉ. साहब के प्रेरक प्रवचन इस अवसर पर होते रहे। विशेष बात यह है कि श्रीमती चन्द्रकान्ता यादव ने संकल्पित होकर इस यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के पूर्व ५६ परिवारों में यज्ञ की समस्त सामग्री लेकर स्वयं श्री इन्द्रप्रकाश यादव जी के साथ जाकर यज्ञ सम्पन्न कराया। श्रीमती यादव को जितना साधुवाद दिया जाय कम ही है।

– नवनीत आर्य, पुरोहित-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ११/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ११/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री सुबोध गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखण्ड), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजयनगर (इन्दौर, म. प्र.), श्री राजनारायण चौधरी; शाजापुर (म.प्र.), श्री अनन्तलाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री गौरीशंकर आर्य; डेरोली अहीर (हरि.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ १६ पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य समाचार

स्वास्थ्य

मनुष्य की प्रकृति निरन्तर शोध करके नये-नये तथ्यों को जानने की रहती है। इसी के अनुरूप मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेकों शोध होते रहते हैं। यहाँ हम कुछ ऐसे ही शोधों की जानकारी पाठकों को दे रहे हैं जिससे वे लाभान्वित हो सकें:-

१. आलू उक्त रक्तचाप बढ़ाता है- ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में छपी एक अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार आलू का प्रचुर मात्रा में उपयोग करने वालों में उक्त रक्तचाप का खतरा बढ़ जाता है। यह अनुसंधान बर्घम एवं महिला अस्पताल एवं हावर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किया गया। अध्ययन के मुताबिक अगर एक सप्ताह में चार सर्विंग या उससे अधिक फ्रेन्च फ्राइज का उपयोग करते हैं तो उनमें उक्त रक्तचाप की संभावना १७ फीसदी बढ़ जाती है। शोधकर्त्ताओं के अनुसार आलू की ग्लाईसीमिक इन्डेक्स ज्यादा होना उसका कारण है। यह शोध अमेरिका के एक लाख सत्तासी हजार पुरुषों व स्त्रियों में किया गया।

२. पुराना मांस हानिकारक- मनुष्य को बुढ़ापे से बहुत डर लगता है। चेहरे पर बढ़ती झुर्रियाँ और सफेद होते बाल निश्चित रूप से किसी को पसन्द नहीं आते। एक अध्ययन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति ऐसा भोजन करता है जिसमें लाल मांस की बहुतायत और फल सब्जियों का अभाव होता है तो उसकी बॉयोलोजिकल आयु बढ़ जाती है और अनेक स्वास्थ्य की समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। यहाँ बायोलोजिकल आयु बढ़ने का तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति चालीस वर्ष की अवस्था में ही साठ वर्ष जैसा दिखने लग जाये। ग्लास्गो विश्वविद्यालय द्वारा यह शोध किया गया। जिसके अन्तर्गत यह पाया गया कि लाल मांस के खाने से सिरम फास्फेट लेवल बढ़ जाता है जिसकी वजह से क्रोनोलोजिकल आयु के मुकाबले बॉयोलोजिकल आयु बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त गुर्दे के रोगों में भी अभिवृद्धि हो जाती है। उक्त विश्वविद्यालय के कैंसर विभाग के प्रोफेसर प्रो. पॉल शील का कहना है कि ऐसे गरीब लोग जिनके भोजन में अन्य लाभकारी फल सब्जियाँ नहीं होती हैं उनमें यह प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

३. पेट के कैंसर की संभावना- अमेरिकन कैंसर अनुसंधान संस्थान एवं विश्व अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर शोध वित्त निगम की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि प्रतिदिन मांस के साथ-साथ तीन या तीन से अधिक पेग शराब के पीए जायें तो पेट के कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। विश्वभर में हुए ८९ शोधों का विश्लेषण कर जिनमें कि पोने दो करोड़ व्यक्ति शामिल हैं, यह निष्कर्ष निकाला गया। यहाँ बता दें कि पेट का कैंसर विभिन्न कैंसरों में पाँचवा स्थान रखता है और कैंसर द्वारा होने वाली मौतों में तीसरा स्थान। शोध में कहा गया है कि ऐसे मांस और मछली जिनको स्मोकिंग अथवा क्योरिंग की प्रक्रिया द्वारा परिरक्षित किया जाता है पेट के कैंसर की संभावना बढ़ा देते हैं।

संकलन- डॉ. प्रिया अग्रवाल
दन्त चिकित्सक
डर्माडेन्ट हॉस्पीटल, उदयपुर

फिर वसंत की आत्मा आई

फिर वसंत की आत्मा आई,
मिटे प्रतीक्षा के दुर्वह क्षण,
अभिवादन करता भू का मन !
दीप्त दिशाओं के वातायन,
प्रीतिसांस-सा मलय समीरण,
चंचल नील, नवल भू यौवन,
फिर वसंत की आत्मा आई।
आम्र मौर में गूंथ स्वर्ण कण,
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन !
देख चुका मन कितने पतझर,
ग्रीष्म शरद, हिम पावस सुन्दर,
ऋतुओं की ऋतु यह कुसुमाकर,
फिर वसंत की आत्मा आई।
विरह मिलन के खुले प्रीति व्रण,
स्वप्नों से शोभा प्ररोह मन !
सब युग सब ऋतु थीं आयोजन,
तुम आओगी वे थीं साधन,
तुम्हें भूल कटते ही कब क्षण ?
फिर वसंत की आत्मा आई।
देव, हुआ फिर नवल युगागम,
स्वर्ग धरा का सफल समागम।।

''कविवर सुमित्रानन्द पन्त''

पत्नी की कुशलता से आत्म गौरव की रक्षा

कथा सरित

जगदीश चन्द्र बसु कलकत्ता विश्वविद्यालय के विज्ञान अध्यापक नियुक्त हुए। परतंत्र भारत में यह पहला अवसर था। अभी तक ऐसा सम्मान किसी भी भारतीय वैज्ञानिक को नहीं दिया गया था। इस दृष्टि से वे बड़े भाग्यशाली माने जाते थे। कुछ समय पश्चात् बसु की पदोन्नति हो गई, किन्तु जिस पद पर उनकी नियुक्ति हुई उसका निर्धारित वेतन जो उस पद पर से पहले काम कर रहे अंग्रेज अधिकारी को मिल रहा था इन्हें नहीं दिया गया। इसकी अपेक्षा उन्हें कम वेतन दिया गया। इस पर बसु ने महान् राष्ट्रीय अपमान अनुभव किया। अपना विरोध प्रकट करते हुये उन्होंने तब तक वेतन लेने से मना कर दिया जब तक कि उनका स्वयं का वेतन पूर्व कार्यरत अंग्रेज अधिकारी को मिलने वाले वेतन के बराबर नहीं कर दिया जाता। जब यह समाचार उनके सम्बन्धियों मित्रों ने सुना तो उन्होंने सलाह दी कि इस बात की उपेक्षा करें और सरकार से जो वेतन मिल रहा है उसे ही स्वीकार कर लें। किन्तु उनकी पत्नी ने उनके विचार का समर्थन किया। यह बसु का सत्याग्रह था किन्तु इसके लिये उन्होंने विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य नियमित रखा।

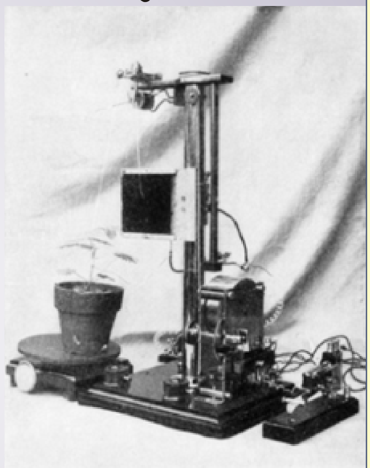

आजीविका का स्रोत्र बन्द हो जाने के कारण घर खर्च चलाने में कठिनाई आना स्वाभाविक था किन्तु उनकी पत्नी ने ऐसे कठिन समय में पति के स्वाभिमान को चोट न आने देने और उनको किसी प्रकार का मानसिक कष्ट न होने देने में पूर्ण तत्परता बरती। उन्होंने अपनी चतुरता से अनेक खर्च तो बचा लिये किन्तु उन दिनों हुगली नदी पर पुल नहीं बना था। अतः कॉलेज जाने के लिए नदी को पार करने के लिए प्रतिदिन आठ आने नाव का किराया देना पड़ता था। इस नाव किराये को बचाना कठिन था।

कोई उपाय नहीं सूझ रहा था तब श्रीमती अचला बसु ने अपना एक मांगलिक आभूषण बेचकर एक छोटी सी नाव खरीद ली। उस दिन से वह स्वयं नदी तक अपने पति को नाव में बिठाकर ले जातीं और नदी के उस पार छोड़ आतीं। वापस आकर अपना काम काज संभालतीं। सायंकाल फिर ठीक समय पर नाव लेकर नदी के उस पार पहुँच कर बसु को उसमें बिठाकर अपने साथ लातीं।

सरकार को इस बात का पता चला तो उसने यह लिखते हुए कि जिसकी ऐसी निष्ठावान पत्नी हो उसका वेतन नहीं रोका जा सकता, उनका वेतन निवर्तमान अंग्रेज अधिकारी के बराबर कर दिया और अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

अस्तु नारी के विवेक और निष्ठा से बसु अपने संकल्प और राष्ट्र के सम्मान को अक्षुण्ण रखते हुए अपने सम्मान की रक्षा कर सके।

साभार- हितोपदेशक

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर सिद्धि

ईश महिमा-

यो भूतं च भव्यं च सर्व यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्टाय ब्रह्मणे नमः॥ - अथर्व. १०/८/१

जो परमात्मा भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् के बीच में जो कुछ होता है उन सब व्यवहारों को यथावत् जानता, सब जगत् को जानता, रचता, पालन, लय करता, जो सुखस्वरूप है, और मोक्ष तथा व्यवहार सुख का देने वाला है, उस सर्वोपरि सामर्थ्य युक्त ज्येष्ठ ब्रह्म को हमारा नमस्कार प्राप्त हो।

ईश्वर सिद्धि

सबसे पहला प्रश्न उठता है कि ईश्वर नाम की कोई सत्ता है भी या नहीं? यद्यपि संसार के अधिकतम लोग ईश्वर में विश्वास रखते हैं (यद्यपि इनमें ईश्वर के स्वरूप व कर्त्तव्य को लेकर अतीव मतभिन्नता है) पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे केवल परम्परावश ऐसा मानते हैं। यही कारण है कि विभिन्न उपासना पद्धति का अवलम्बन करने वाली नई पीढ़ी से ईश्वर सम्बन्धी प्रश्न किए जाते हैं तो शीघ्र ही यह सामने आ जाता है कि ईश्वर की सत्ता में इनका दृढ़ विश्वास नहीं हैं। और जब दृढ़ विश्वास नहीं है तो ईशोपासना एवं ईश्वर प्रणिधान के कोई मायने नहीं रह जाते। अतएव ईश्वर की सत्ता में अटूट विश्वास होना अत्यन्त आवश्यक है। यह अटूट विश्वास ही परहित हेतु स्वयं का सर्वस्व निछावर कर देने की उदात्त भावना का आधार है।

ईश्वर आँखों से नहीं दिखता

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्॥

- ऋ. १/१६४/३१

सबके द्रष्टा परमेश्वर को जीव (नेत्रों) से नहीं देख सकते हैं, किन्तु परमेश्वर सबको ठीक ढंग से देखता है।

ईश्वर का प्रत्यक्ष कैसे हो:- 'अधजल गगरी छलकत जाय' की मिसाल विज्ञान से न्यून मात्रा में परिचित विज्ञान के विद्यार्थियों पर लागू होती है। उनका या लगभग उन्हीं की श्रेणी में आने वाले महानुभवों का कथन होता है कि वे ईश्वर का अस्तित्व इसलिये नहीं मान सकते क्योंकि वह आँखों से दिखाई नहीं देता। अर्थात् जो पदार्थ आँखों से दिखाई देता है उसी का अस्तित्व माना जा सकता है। पर क्या यह अभिकथन सही है? तनिक भी गम्भीरता पूर्वक विचार करते हैं तो इस दावे की पोल खुल जाती है। संसार में अनेकानेक ऐसे पदार्थ हैं जो दिखाई नहीं देते परन्तु उनका अस्तित्व निर्विवाद है।

विचार करें निम्न परिस्थितियों में हमें वस्तुऐं दिखाई नहीं देतीं परन्तु क्या हम उनके अस्तित्व से इन्कार कर सकते हैं? कदापि नहीं।

१. अतीव दूर की वस्तुऐं- यथा दूर आकाश में उड़ता पक्षी अथवा वायुयान आदि।

२. अतीव नजदीक की वस्तुऐं- यथा आँख में लगा काजल, शरीर के अन्दर का रक्त, मज्जा, नस-नाड़ियाँ आदि।

३. आँखों में दोष होने के कारण- मोतियाबिन्द, रतौंधी, रंग-अन्धता, पीलिया आदि रोगों के कारण।

४. देखने में सहायक पदार्थ न होने के कारण- सूर्य के प्रकाश या अन्य कृत्रिम प्रकाश के अभाव में।

५. आँख का विषय न होने के कारण- वायु, सुगन्ध, हवा में प्रसारित गान आदि नहीं देखे जा सकते।

६. अभौतिक पदार्थ- सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, दर्द आदि।

७. मध्य में आए आवरण के कारण- भूमिगत रत्नादि, कमरे में दीवार के पीछे की वस्तुऐं दिखायी नहीं देतीं।

८. कुछ गुण समान होने के कारण- दूध में मिला पानी, गाय के दूध में भैंस का दूध।

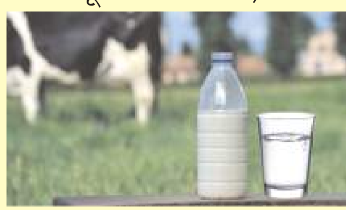

स्पष्ट है कि हर वस्तु आँखों से नहीं दिख सकती। केवल रूप गुण जिनमें है, आँखों का विषय होने के कारण वही वस्तुएँ दिखती हैं। परन्तु न दिखने वाली वस्तुओं का भी अस्तित्व है यह निश्चित है।

- अशोक आर्य

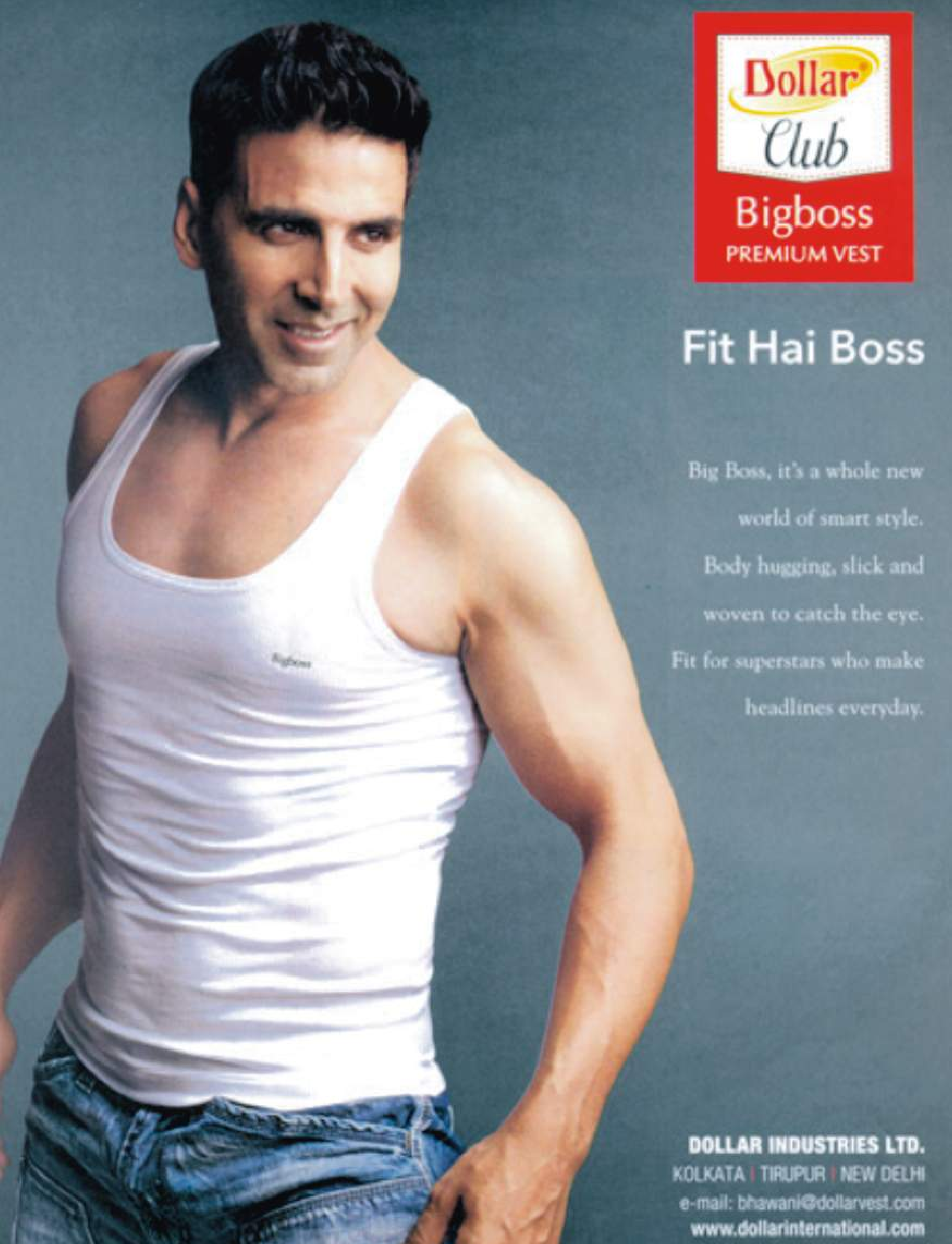
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

(वह) सविता देव परमात्मा हमारी बुद्धियों को प्रेरण करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय– श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय– मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर